वामन पुराण

- वामन पुराण
- राजा बलि
- शिव-सती
- शिवलिंग
- सृष्टि की उत्पत्ति,विकास,विस्तार और भूगोल
- कथाएँ और चरित्र
- सुसंस्कृत राजपुरुष

वामन पुराण :

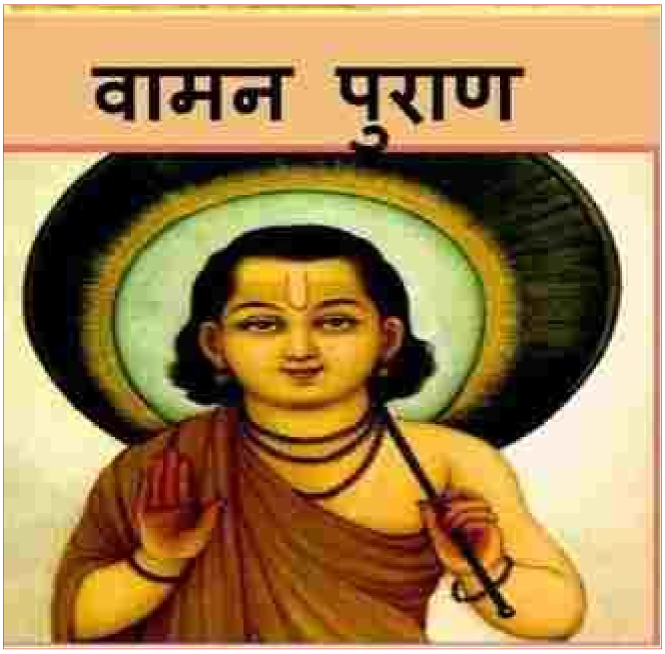

हिन्दू धर्म में वामन पुराण का अहम महत्त्व है। वामन विष्णु जी का एक अवतार माना जाता है। दो भागों में बंटे वामन पुराण में कई रोचक कथाएं और जीवन से संबंधित नियमों आदि का वर्णन किया गया है।

वामन पुराण में कूर्म अवतार का वृतांत, गणेश व स्कन्द (कार्तिकेय) आख्यान, शिव-पार्वती विवाह आदि विषयों की विस्तारपूर्वक व्याख्या है। इसके अलावा वामन, नर नारायण,माँ दुर्गा के चरित्र के साथ भक्त प्रह्लाद तथा श्रीदामा व अन्य भक्तों का वर्णन मिलता है। भगवान शिव के चरित्र को समझने के लिए वामन पुराण एक अहम ग्रंथ माना जाता है।

वामन पुराण नाम से तो वैष्णव पुराण लगता है,क्योंकि इसका नामकरण विष्णु के 'वामन अवतार' के आधार पर किया गया है,परन्तु वास्तव में यह शैव पुराण है। इसमें शैव मत का विस्तारपूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। यह आकार में छोटा है। कुल दस हज़ार श्लोक इसमें बताए जाते हैं,किन्तु फिलहाल छह हज़ार श्लोक ही उपलब्ध हैं।

इसका उत्तर भाग प्राप्त नहीं है। इस पुराण में पुराणों के सभी अंगों का यथोचित वर्णन किया गया है। इसकी प्रतिपादन शैली अन्य पुराणों से कुछ भिन्न है। ऐसा लगता है कि इसे कई विद्वानों ने अलग-अलग समय पर लिखा था।

इसमें जो पौराणिक उपाख्यान दिए गए हैं,वे अन्य पुराणों में वर्णित उपाख्यानों से भिन्न हैं। किन्तु यहाँ उनका उल्लेख स्पष्ट और विवेचनापूर्ण है।

शैव पुराण होते हुए भी 'वामन पुराण में विष्णु को कहीं नीचा नहीं दिखाया गया है। एक विशेष बात यह हे कि इस पुराण का नामकरण जिस राजा बलि और वामन चरित्र पर किया गया है,उसका वर्णन यद्यपि इसमें दो बार किया गया है,परंतु वह बहुत ही संक्षेप में है।

राजा बलि :

वेदों में कहा गया है यह समस्त जगत विष्णु के तीन चरणों के अन्तर्गत है। इसी की व्याख्या करते हुए ब्राह्मण ग्रन्थों में एक संक्षिप्त कथानक जोड़ा गया। उसे ही पुराणकारों ने अपने काव्य और साहित्यिक ज्ञान द्वारा एक प्रभावशाली रूप दे दिया। इस उपाख्यान के अन्तर्गत दैत्यराज प्रह्लाद के पौत्र राजा बलि का वैभवपूर्ण वर्णन करते हुए उसकी दानशीलता की प्रशंसा की गई है।

उपाख्यान इस प्रकार है कि एक बार राजा बलि ने देवताओं पर चढ़ाई करके इन्द्रलोक पर अधिकार कर लिया। उसके दान के चर्चे सर्वत्र होने लगे। तब विष्णु वामन अंगुल का वेश धारण करके राजा बलि से दान मांगने जा पहुंचे। दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य ने बलि को सचेत किया कि तेरे द्वार पर दान मांगने स्वयं विष्णु भगवान पधारे है।उन्हें दान मत दे बैठनां परन्तु राजा बलि उनकी बात नहीं माना।

उसने इसे अपना सौभाग्य समझा कि भगवान उसके द्वार पर भिक्षा मांगने आए हैं। तब विष्णु ने बलि से तीन पग भूमि मांगी। राजा बलि ने संकल्प करके भूमि दान कर दी। तब विष्णु ने अपना विराट रूप धारण करके दो पगों में तीनों लोक नाप लिया और तीसरा पग राजा बलि के सिर पर रखकर उसे पाताल भेज दिया।

शिव-सतीः

इस प्रकरण में विष्णु को सृष्टि का नियन्ता और दैत्यराज बलि को दानवीरता प्रदर्शित की गई है। परन्तु यह कथा ही वामन पुराण की प्रमुख वर्ण्य-विषय नहीं है। इस पुराण में शिव चरित्र का भी विस्तार से वर्णन है।

प्रसिद्ध प्रचलित कथाओं के अनुसार सती बिना निमन्त्रण के अपने पिता दक्ष के यज्ञ में जाती हैं और वहां शिव का अपमान हुआ देखकर अग्नि दाह कर लेती हैं।

परन्तु 'वामन पुराण के अनुसार गौतम-पुत्री जया सती के दर्शन के लिए आती हैं। उससे सती को ज्ञात होता है कि जया की अन्य बहनें विजया, जयन्ती एवं अपराजिता अपने नाना दक्ष के यज्ञ में गई हैं।

इस बात को सुनकर सती शिव को निमन्त्रण न आया जानकर शोक में डूब जाती है और वहीं भूमि पर गिरकर अपने प्राण त्याग देती है। यह देख शिव की आज्ञा से वीरभद्र अपनी सेना के साथ जाता है और दक्ष-यज्ञ का विध्वंस कर देता है।

वामन पुराण के अनुसार देवी पार्वती ने जन्म दिया था राक्षस को, शिव ने किया था वध

शिव पार्वती के पुत्रों के रूप में कार्तिक और गणेश का नाम सभी लोग जानते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन दोनों के अलावा उनका एक पुत्र और भी था जो किसी देवता या भगवान के रूप में नहीं बल्कि राक्षस के रूप में जाना जाता है। वामन पुराण के अनुसार शिव पार्वती के पुत्र कार्तिक और गणेश के अलावा अंधक नाम के पुत्र के जन्म की कहानी मिलती है।

इस कहानी के अनुसार एक बार भगवान शिव और माता पार्वती घूमते हुए काशी पहुंच गए। वहां पर भगवान शिव अपना मुंह पूर्व दिशा की ओर करके बैठे थे। उसी समय पार्वती ने पीछे से आकर अपने हाथों से भगवान शिव की आंखों को बंद कर दिया। ऐसा करने पर उस पल के लिए पूरे संसार में अंधेरा छा गया। दुनिया को बचाने के लिए शिव ने अपनी तीसरी आँख खोल दी,जिससे संसार में पुनः रोशनी हो गई। लेकिन उसकी गर्मी से पार्वती को पसीना आ गया। उन पसीने की बूंदों से एक बालक प्रकट हुआ। उस बालक का मुंह बहुत बड़ा था और भंयकर था।

उस बालक को देखकर माता पार्वती ने भगवान शिव से उसकी उत्पत्ति के बारे में पूछा। भगवान शिव ने पसीने से उत्पन्न होने के कारण उसे अपना पुत्र बताया। अंधकार में उत्पन्न होने की वजह से उसका नाम अंधक रखा गया। कुछ समय बाद दैत्य हिरण्याक्ष के पुत्र प्राप्ति का वर मागंने पर भगवान शिव ने अंधक को उसे पुत्र रूप में प्रदान कर दिया। अंधक असुरों के बीच ही पला बढ़ा और आगे चलकर असुरों का राजा बना।

अंधक ने तपस्या करके ब्रह्मा जी से वरदान मांग लिया था की वो तभी मरे जब वो यौन लालसा से अपनी माँ की और देखे। अंधक ने सोचा था की ऐसा कभी नहीं होगा क्योकि उसकी कोई माँ नहीं है। वरदान मिलने के बाद अंधक देवताओं को परास्त करके तीनो लोकों का राजा बन गया।

फिर उसे लगा की अब उसके पास सब कुछ है इसलिए उसे शादी कर लेनी चाहिए। उसने तय किया की वो तीनो लोकों की सबसे सुन्दर स्त्री से शादी करेगा। जब उसने पता किया तो उसे पता चला की तीनो लोकों में पर्वतों की राजकुमारी पार्वती से सुन्दर कोई

नहीं है। जिसने अपने पिता का वैभव त्याग कर शिव से शादी कर ली है। वो तुरंत पार्वती के पास गया और उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा।

पार्वती के मना करने पर वो उसे जबरदस्ती ले जाने लगा तो पार्वती ने शिव का आह्वान किया। पार्वती के आह्वान पर शिव वहां उपस्थित हुए और उसने अंधक को बताया कि तुम पार्वती के ही पुत्र हो।

ऐसा कहकर उन्होंने अंधक का वध कर दिया। वहीं दूसरी तरफ वामन पुराण में अंधक को शिव-पार्वती का पुत्र बताया गया है जिसका वध शिव करते है जबकि एक अन्य मतानुसार अंधक, कश्यप ऋषि और दिति का पुत्र था जिसका वध भगवन शिव ने किया था।

शिवलिंगः

वामन पुराण में काम-दहन की कथा भी सर्वथा भिन्न है। इसमे दिखाया गया है कि शिव जब दक्ष-यज्ञ का विध्वंस कर रहे थे तब कामदेव ने उन पर उन्माद,संताप और विज्रम्भण नामक तीन बाण चलाए, जिससे शिव विक्षिप्त होकर सती के लिए विलाप करने लगे। व्यथित होकर उन्होंने वे बाण कुबेर के पुत्र पांचालिक को दे दिए। जब कामदेव फिर बाण चलाने लगा तो शिव भागकर दारूकवन में चले गए। वहां तपस्या रत ऋषियों की पत्नियां उन पर आसक्त हो गईं।इस पर ऋषियों ने शिवलिंग खंडित होकर गिरने का शाप दे दिया।

शाप के कारण जब शिवलिंग धरती पर गिर पड़ा, तब सभी ने देखा कि उस लिंग का तो कोई ओर-छोर ही नहीं है। इस पर सभी देवगण शिव की स्तुति करने लगे। ब्रह्मा और विष्णु ने भी स्तुति की। तब शिव ने प्रसन्न होकर पुन: लिंग धारण किया।

इस पर विष्णु ने चारों वर्णों द्वारा शिवलिंग की उपासना का नियम प्रारम्भ किया। साथ ही शैव,पाशुपत,‘कालदमन’ और ‘कापालिक’ नामक चार प्रमुख शास्त्रों की रचना की।

एक कथा इस प्रकार है कि एक बार शिव चित्रवन में तपस्या कर रहे थे। तभी कामदेव ने उन पर फिर आक्रमण किया। तब शंकर भगवान ने क्रोध में आकर उसे अपनी दृष्टि से भस्म कर दिया। भस्म होने के उपरान्त वह राख नहीं बना, अपितु पांच पौधों के रूप में परिवर्तित हो गया। वे पौधे दुक्मधृष्ट, चम्पक, वकुल, पाटल्य और जातीपुष्प कहलाए।

इस प्रकार 'वामन पुराण में कामदेव के भस्म होकर अनंग हो जाने का वर्णन नहीं मिलता, बल्कि वह सुगन्धित फूलों के रूप में परिवर्तित हो गया। इस पुराण में बसंत का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है।

ततो वसन्ते संप्राप्ते किंशुका ज्वलनप्रभा:।
निष्पत्रा: सततंरेजु: शोभयन्तो धरातलम्॥

अर्थात् बसन्त ऋतु के आगमन पर ढाक के वृक्ष,लाल वर्ण वाले पुष्पों के कारण अग्नि के समान प्रभा वाले प्रतीत हो रहे थे। उन लाल पुष्पों के गुच्छों से लदे वृक्षों के कारण धरा शोभायमान हो रही थी।

सृष्टि की उत्पत्ति,विकास,विस्तार और भूगोल :

इसके अतिरिक्त 'वामन पुराण में सृष्टि की उत्पत्ति,विकास,विस्तार और भूगोल का भी उल्लेख है। भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों,पर्वतों, प्रसिद्ध स्थलों और नदियों का भी वर्णन प्राप्त होता है। पाप-पुण्य तथा नरक का वर्णन भी इस पुराण में है। व्रत, पूजा, तीर्थाटन आदि का महत्त्व भी इसमें बताया गया है। जिस व्यक्ति को 'आत्मज्ञान' प्राप्त हो जाता है उसे तीर्थों व्रतों आदि की आवश्यकता नहीं रह जाती ।

सच्चा ब्राह्मण वही है, जो धन की लालसा नहीं करता और दान ग्रहण करना हीन कार्य समझता है। प्राणीमात्र के कल्याण को ही वह अपना धर्म मानता है।

कथाएँ और चरित्र :

इस पुराण के कुछ अन्य उपाख्यानों में प्रह्लाद की कथा,अन्धकासुर की कथा,तारकासुर और महिषासुर वध की कथा,दुर्गा सप्तशती,देवी माहात्म्य,वेन चरित्र,चण्ड-मुण्ड और शुंभ-निशुंभ वध की कथा,चित्रांगदा विवाह,जम्भ-कुजम्भ वध की कथा,धुन्धु पराजय आदि की कथा,अनेक तीर्थों का वर्णन तथा राक्षस कुल के राजाओं का वर्णन आदि प्राप्त होता है।

सुसंस्कृत राजपुरुष:

वामन पुराण में राक्षस राजाओं को रक्तपिपासु या दुष्प्रवृत्तियों से ग्रस्त नहीं दिखाया गया है,बल्कि उन्हें उन्नत सभ्यता का पालन करने वाले,कला प्रेमी एवं सुसंस्कृत राजपुरुषों के रूप में दर्शाया गया है। वे लोग आर्य सम्यता को नहीं मानते थे,इसीलिए आर्य लोग उन्हें राक्षस कहा करते थे। वे प्राय: उनसे युद्ध करते थे और उन्हें नष्ट कर देते थे।

इस पुराण ने सदाचार का वर्णन करते हुए सबसे बड़ा पाप कृतघ्नता को माना है। ब्रह्महत्या और गोहत्या का प्रायश्चित्त हो सकता है, परंतु उपकारी की प्रति कृतघ्न व्यक्ति के पाप का कोई प्रायश्चित्त नहीं है।

वामन पुराण में कहा गया है कि देवगण में भगवान जनार्दन सर्वश्रेष्ठ हैं।

- ★ पर्वतों में शेषाद्रि,
- ★ आयुधों में सुदर्शन चक्र
- ★ पक्षियों में गरुड़
- ★ सर्पों में शेषनाग
- ★ प्राकृतिक भूतों में पृथ्वी
- ★ नदियों में गंगा
- ★ जलजों में पद्म
- ★ तीर्थों में कुरुक्षेत्र
- ★ सरोवरों में मानसरोवर
- ★ पुष्पवनों में नन्दन वन
- ★ धर्म-नियमों में सत्य
- ★ यज्ञों में अश्वमेध
- ★ तपस्वियों में कुम्भज ऋषि
- ★ समस्त आगमों में वेद

★ पुराणों में 'मत्स्य पुराण'
★ स्मृतियों में 'मनुस्मृति'
★ तिथियों में दर्श अमावस्या
★ देवों में इन्द्र
★ तेज में सूर्य
★ नक्षत्रों में चन्द्र
★ धान्यों में अक्षत (चावल),

द्विपदों में विप्र (ब्राह्मण) और चतुष्पदों में सिंह सर्वश्रेष्ठ होता है।

यहाँ 'आत्मज्ञान' को ही सर्वज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान स्वीकार किया गया है। धर्म का विवेचन करते हुए यह पुराण कहता है-

किं तेषां सनेलैस्तीर्थेराश्रभैर्वा प्रयोजनम्।
येषां चानन्मकं चित्तमात्मन्येव व्यवस्थिम्॥
अर्थात् जिनका अन्तर्मन (चित्त) व्यवस्थित अथवा संयमित है,

उनको तीर्थों और आश्रमों की कोई आवश्यकता नहीं होती। उनका हृदय ही तीर्थ होता है। मन ही आश्रम होता है।

वामन पुराण के भागः

वामन पुराण में दस हजार हजार श्लोकों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त यह दो भागों में बंटा है जो निम्न हैः

पूर्व भाग: वामन पुराण के पूर्व भाग में ब्रह्मा जी की कथा के साथ भगवान हरी की काल रूप संज्ञा,कामदेव दहन,प्रह्लाद एवं नर-नारायण का युद्ध, देवासुर संग्राम,काम्यव्रत व

अन्य कथाओं का वर्णन किया गया है।सुकेशी और सूर्य की कथा , श्रीदुर्गा चरित्र , कुरुक्षेत्र वर्णन

नर-नारायण से प्रह्लाद का युद्ध : एक बार प्रह्लाद दानवों के साथ नैमिषारण्य तीर्थ पहुंचे। उन्होंने अनेक ऋषियों के दर्शन कर उनका आशीर्वाद लिया। तीर्थ में भ्रमण करते हुए वह विशाल शाखाओं से घिरे एक वृक्ष के नीचे पहुंचे और वहां विश्राम के लिए बैठ गए।

अचानक उनकी दृष्टि वृक्ष की शाखाओं पर गई। शाखाएं बाणों से बिंधी हुई थीं। उन्हें यह देखकर क्रोध आया कि किसी ने इन हरी-भरी शाखाओं को भी बाणों का निशाना बनाकर पाप किया है। उनकी दृष्टि बाईं ओर गई, तो दो मुनि तपस्या में लीन थे। उनके पास ही धनुष-बाण रखे थे।

प्रह्लाद ने समझा कि मुनि वेशधारी ये दोनों दुष्ट प्रवृत्ति के हैं तथा अहंकार से ग्रस्त होकर उन्होने वृक्ष का विनाश किया है। उन्होंने बल के अहंकार में दोनों को युद्ध करने की चुनौती दे दी। वे मुनि प्रह्लाद के साथ युद्ध करने लगे।

दोनों मुनियों ने प्रह्लाद के वारों को विफल कर डाला। निराश होकर प्रह्लाद ने भगवान विष्णु की स्तुति की। भगवान विष्णु ने प्रकट होकर कहा, प्रह्लाद, ये दोनों मुनि साक्षात नर-नारायण हैं। इन्हें कोई भी नहीं जीत सकता।

नर-नारायण को चुनौती देकर तुमने भारी भूल की है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि अभी आराधना कर उन्हें प्रसन्न करो। प्रह्लाद के बलशाली होने का अहंकार चूर-चूर हो गया। वह हिरण्याक्ष के पुत्र अंधक को राज्य सौंपकर बद्रीनाथ चले गए। वहां उन्होंने नर-नारायण की स्तुति कर उनसे क्षमा मांगी।

देवासुर संग्राम :

देवता-दानव के बीच युद्ध आरम्भ

मरणधर्मा मनुष्य इस संसार में सत्कर्मो द्वारा रुद्रदेव की ही पूजा करते है इन्हीं को शिव, ईश, रुद्र और पितामह कहते हैं। लोग नाना प्रकारके भावों से भगवान महेश्वर की पूजा करते हैं। इसी प्रकार ब्राह्मण हितैषी, देवसेना पति कृत्तिकानन्दन स्कंद भी देवताओं की सेना से घिरे हुए देवेश्वर भगवान शिव के पीछे-पीछे जा रहे थे।

तदनन्तर महादेव जी ने कुमार महासेन से यह उत्तम बात कही-'बेटा! तुम सदा सावधानी के साथ मारुतस्कन्ध नामक देवताओं के सातवें व्यूह की रक्षा करना।'

स्कन्द बोले- प्रभो! मैं सातवें व्यूह मारुत स्कन्ध की अवश्य रक्षा करुँगा। देव इसके! सिवा और भी मेरा जो कुछ कर्तव्य हो, उसके लिये आप शीघ्र आज्ञा दीजिये। रुद्र ने कहा- पुत्र! काम पड़नेपर तुम सदा मुझसे मिलते रहना। मेरे दर्शन से तथा मुझमें भक्ति करने से तुम्हारा परम कल्याण होगा।

मार्कण्डेय जी कहते हैं- राजन्! ऐसा कहकर भगवान महेश्वर नें कार्तिकेय को हृदय से लगाकर विदा किया। स्कन्दके विदा होते ही बड़ा भारी उत्पात होने लगा। महाराज! सहसा समस्त। देवताओं को मोह में डालता हुआ नक्षत्रों सहित आकाश प्रज्वलित हो उठा। समस्त संसार अत्यन्त मूढ़-सा हो गया। पृथ्वी हिलने लगी। उसमें गड़गड़ाहट पैदा हो गयी।

सारा जगत अन्धकार में मग्न-सा जान पड़ता था। उस समय यह दारुण उत्पात देखकर भगवान शंकर, महाभाग उमा, देवगण तथा महर्षिगण क्षुब्ध हो उठे। जिस समय वे समय वे सब लोग मोह-ग्रस्त हो रह थे, उसी समय पर्वतों और मेघमालाओं के समान दैत्यों की विशाल एवं भंयकर सेना दिखायी दी। वह नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थी।

उसके सैनिकों की संख्या गिनी नहीं जा सकती थी। वह भंयकर वाहिनी अनेक प्रकार की बोली बोलती हुई भीषण गर्जना कर रही थी। उसनें रण-भूमि में आकर देवताओं तथा भगवान शंकर पर धावा बोल दिया। दैत्यों ने देताओं के सैनिकों पर कई बार बाण वर्षा की। शिलाखण्ड, शतघ्नी (तोप), प्रास, खड्ग, परिघ और गदाओं के लगातार प्रहार हो रहे थे। इन भंयकर अस्त्रों की मार से देवताओं की सारी सेना क्षण भर में (पीठ दिखाकर) भाग चली। सारे सैनिक युद्ध से विमुख दिखाई देते थे।

बहुत-से युद्धा हाथी और घोड़े काट डाले गये। असंख्य आयुध और बड़े-बड़े रथ टूक-टूक कर दिये गये। इस प्रकार दानावों द्वारा पीड़ित हुई देवताओं की सेना युद्ध से विमुख हो गयी। जैसे आग समूचे वनको जला देती है, उसी प्रकार असुरोंने देवताओंकी सेनामें भारी मारकाट मचा दी। बड़े-बड़े वृक्षोंसे भरे हुए वनका अधिकाश भाग जल जाने पर उसकी जैसी दुरवस्था दिखाई देती है, उसी प्रकार दैत्योंकी अस्त्राग्निमें अधिकांश सैनिकोंके दग्ध हो जानेके कारण वह देवसेना धराशायी हो रही थी।

उस महासमरमें असुरोंकी मार खाकर वे सब देवता भागते हुए कहीं कोई रक्षक नही पा रहे थे। किन्हीं के सिर फट गये थे, तो किन्हीं के सब अंगों में गहरे घाव हो गये थे। तदनन्तर बलासुर विनाशक देवराज इन्द्र ने अपनी उस सेना को दानवों से पीडित होकर भागती देख उसे आश्वासन देते हुए कहा- 'शूरवीरो! भय त्याग दो, इससे तुम्हारा मंगल होगा। हथियार उठाओ और पराक्रम में मन लगाओ। तुम्हें किसी प्रकार व्यथित नहीं होना चाहिये।

इन भयंकर दिखाई देने वाले दुराचारी दानवों को जीतो। तुम्हारा कल्याण हो। तुम सब लोग मेरे साथ इन महाकाय दैत्यों पर टूट पड़ो।' इन्द्र की यह बात सुनकर देवताओं को बड़ी सान्त्वना मिली। उन्होंने इन्द्र को अपना आश्रय बनाकर दानवों के साथ पुन: युद्ध प्रारम्भ किया। तत्पश्चात वे सभी देवता महाबली मरूदगण तथा वसुओं एवं महाभाग साध्यगण सहित युद्धभूमिमें आगे बढ़ने लगे।

उन्होंने संग्राम में कुपित होकर दैत्यों की सेनाओं के ऊपर जो अस्त्र-शस्त्र और बाण चलाये, वे उनके शरीरों में घुसकर प्रचुर मात्रा में रक्त पीने लगे। वे तीखे बाण उस समय दैत्यों के शरीरों को विदीर्णकर रण-भूमिमें इस प्रकार गिरते दिखाई देते थे, मानों वृक्षों से सर्प गिर रहे हों। राजन्! देवताओं के बाणों से विदीर्ण हुए वे दैत्यों के शरीर सब प्रकारसे छिन्त्र-भिन्त्र हुए बादलों के समान धरती पर गिरने लगे।

उत्तर खंडः

उत्तर या अंतिम भाग में चार संहिताएँ हैं। यह अलग-अलग हजार श्लोकों वाली हैं। इन श्लोकों में दुर्गा जी के विभिन्न रूपों के साथ उमा- माहेश्वरी,भगवती गौरी और गणेश्वरी आदि का वर्णन है।श्रीकृष्ण तथा उनके भक्तों का वर्णन ,जगदम्बा के अवतार की कथा ,सूर्य की महिमा

भगवान शिव तथा गणेश जी के चरित्र का वर्णन :

भगवान गणेश शिव परिवार में ज्येष्ठ पुत्र हैं। शिव परिवार के प्रत्येक व्यक्ति या उनसे जुड़े वाहन एक- दूसरे से विपरीत होने के बावजूद प्रेम के धागे से बंधे हैं। जैसे शिवपुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर है, मगर शिवजी के गले में सर्प लटके रहते हैं। वैसे स्वभाव से मयूर और सर्प दुश्मन हैं। इधर गणपति का वाहन चूहा है, जबकि सांप मूषकभक्षी जीव है। पार्वती स्वयं शक्ति हैं, जगदम्बा हैं जिनका वाहन शेर है। मगर शिवजी का वाहन तो नंदी बैल है। परंतु नहीं, इन भिन्नताओं, शत्रुताओं और ऊंचे-नीचे स्तरों के बावजूद शिव का परिवार शांति के साथ कैलाश पर्वत पर प्रसन्नतापूर्वक रहता है। स्वभावों की विपरीतताओं, विसंगतियों और असहमतियों के बावजूद सब कुछ सुगम है, क्योंकि परिवार के मुखिया ने सारा विष तो अपने गले में थाम रखा है। विसंगतियों के बीच संतुलन का बढ़िया उदाहरण है शिव का परिवार। इसी तरह भगवान गणेश का परिवार भी सुख और समृद्ध से परिपूर्ण है।

गणेश जन्म कथा :

अलग-अलग पुराणों में गणेशजी की जन्म कथा अलग-अलग है, लेकिन सर्वमान्यता के अनुसार गणेशजी को पार्वतीजी ने एक दुर्वा से बनाकर अपने पहरे के लिए रखा था। कथा के अनुसार गणेश को द्वार पर बिठाकर पार्वती स्नान करने लगीं। इतने में शिव आए और पार्वती के भवन में प्रवेश करने लगे। गणेश ने जब उन्हें रोका तो क्रुद्ध शिव ने उसका सिर काट दिया। इस घटना से पार्वतीजी क्रोधित हो गईं, तब शिवजी ने एक हाथी का सिर उन पर लगाकर उन्हें फिर से जीवित कर दिया।

* गणेशजी के माता-पिता : पार्वती और शिव।
* गणेशजी के भाई : श्रीकार्तिकेय (बड़े भाई)। हालांकि उनके और भी भाई हैं जैसे सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा।
* गणेशजी की बहन : अशोक सुंदरी। हालांकि महादेव की और भी पुत्रियां थीं जिन्हें नागकन्या माना गया- जया, विषहर, शामिलबारी, देव और दोतलि। अशोक सुंदरी को भगवान शिव और पार्वती की पुत्री बताया गया इसीलिए वही गणेशजी की बहन है। इसका विवाह राजा नहुष से हुआ था।
* गणेशजी की पत्नियां : गणेशजी की 5 पत्नियां हैं : ऋद्धि, सिद्धि, तुष्टि, पुष्टि और श्री।

गणेशजी के पुत्र : पुत्र लाभ और शुभ तथा पोते आमोद और प्रमोद।
* अधिपति : जल तत्व के अधिपति।
* प्रिय पुष्प : लाल रंग के फूल।

* प्रिय वस्तु : दुर्वा (दूब), शमी-पत्र।
* प्रमुख अस्त्र : पाश और अंकुश।
* गणेश वाहन : सिंह, मयूर और मूषक। सतयुग में सिंह, त्रेतायुग में मयूर, द्वापर युग में मूषक और कलियुग में घोड़ा है।
* गणेशजी का जप मंत्र : ॐ गं गणपतये नम: है।
* गणेशजी की पसंद : गणेशजी को बेसन और मोदक के लड्डू पसंद हैं।
* गणेशजी की प्रार्थना के लिए : गणेश स्तुति, गणेश चालीसा, गणेशजी की आरती, श्रीगणेश सहस्रनामावली आदि।
* गणेशजी के 12 प्रमुख नाम : सुमुख, एकदंत, कपिल, गजकर्णक, लंबोदर, विकट, विघ्न-नाश, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचंद्र, गजानन।

वामन पुराण का फलः

मान्यता है कि वामन पुराण का पाठ और इसे सुनने से मानव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस पुराण को लिखकर शीतकाल यानि सर्दी के दिनों में भक्तिपूर्वक ब्राह्मण को दान करता है, वह अपने पितरों को नरक से निकाल कर स्वर्ग में पहुंचा देता है और स्वयं भी अनेक प्रकार के भोगों का उपभोग करके देह-त्याग के पश्चात भगवान विष्णु के परम पद को प्राप्त कर लेता है।

नवकार मंत्र :

नवकार मंत्र ही महामंत्र,
निज पद का ज्ञान कराता है।निज जपो शुद्ध मन बच तन से,
मनवांछित फल का दाता है॥1॥नवकार
पहला पद श्री अरिहंताणां,
यह आतम ज्योति जगाता है।
यह समोसरण की रचना की भव्यों को याद दिलाता है॥2॥नवकार

दूजा पद श्री सद्धाणं है,
यह आतम शक्ति बढ़ाता है। इससे मन होता है निर्मल,
अनुभव का ज्ञान कराता है॥3॥नवकार

तीजा पद श्री आयरियाणां,दीक्षा में भाव जगाता है।
दुःख से छुटकारा शीघ्र मिले,
जिनमत का ज्ञान बढ़ाता है॥4॥नवकार

चौथा पद श्री उवज्झायणं,
यह जैन धर्म चमकता है। कर्मास्त्रव को ढीला करता,
यह सम्यक् ज्ञान कराता है॥5॥नवकार

पंचमपद श्री सव्वसाहूणं,
यह जैन तत्व सिखलाता है।
दिलवाता है ऊँचा पद,संकट से शीघ्र बचाता है॥6॥नवकार

तुम जपो भविक जन महामंत्र,
अनुपम वैराग्य बढ़ाता है।नित श्रद्धामन से जपने से,
मन को अतिशांत बनाता है॥7॥नवकार

संपूर्ण रोग को शीघ्र हरे,
जो मंत्र रुचि से ध्याता है।
जो भव्य सीख नित ग्रहण करे, वो जामन मरण मिटाता है॥8॥नवकार

वामन पुराण श्रीहरि हैं इस दैत्य के द्वारपाल, पढ़ें कथाः

प्रजापति कश्यप की दो पत्नियां थीं। एक का नाम था दिति और दूसरी का नाम अदिति। अदिति की संतान देव यानी सुर थे और दिति की संतान थे दैत्य यानी असुर। दोनों में आपस में बनती नहीं थी। वे दोनों बात-बात पर आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। देवासुर-संग्राम पुराणों में प्रसिद्ध है। देवों के गुरु थे आचार्य बृहस्पति और दैत्यों के गुरु थे आचार्य शुक्र। इन दोनों के विचारों में भिन्नता थी। देवों का राजा इंद्र था। देवगण विलासी थे।

एक बार दोनों पक्षों में घोर युद्ध हुआ। युद्ध में असुर हार गए परन्तु आचार्य शुक्र ने संजीवनी विद्या द्वारा दैत्यों को जीवित कर दिया। संजीवनी विद्या को संजीवनी-वाणी भी कहा गया है। आचार्य शुक्र की वाणी में ओजस भी था और तेजस भी। रणभूमि में हारे हुए दैत्यों में अपनी वाणी से आचार्य शुक्र ने ओजस और तेजस (साहस) का संचार कर दिया। उन्होंने मुर्दों में जान फूंक दी।

वे फिर से चौगुने साहस और वीरता के साथ देवताओं से लड़े और उनको परास्त कर दिया। देवराज इंद्र अपनी नगरी छोड़ कर भाग गए। बाकी बचे देवता असुरों के भय से मारे-मारे फिरने लगे।

देवमाता अदिति अपने पुत्रों की ऐसी दशा देखकर व्यथित हो गई। उन्होंने अपनी मनोदशा अपने पति प्रजापति कश्यप को सुनाई तो प्रजापति ने कहा,तुम्हारी व्यथा भगवान विष्णु ही दूर कर सकते हैं। तुम उन्हीं की शरण में जाओ। भृगुवंशी ब्राह्मणों ने दैत्यराज बलि को महान प्रतापी बनाकर देवों को परास्त कर दिया। अब भगवान विष्णु ही देवों के सहायक हो सकते हैं।

तत्पश्चात प्रजापति कश्यप ने उसे अतिथि-सत्कार की महिमा के विषय में बताया और पूछा,तुम्हारे घर से कोई अतिथि,कोई सच्चा ब्राह्मण बिना सत्कार पाए लौट तो नहीं गया क्योंकि ऐसा माना गया है कि पूज्य अतिथि की उपेक्षा से सदा अमंगल ही होता है।

अदिति ने कहा,नहीं स्वामी! ऐसा तो मेरे घर में कभी नहीं हुआ। अतिथियों का मैंने हमेशा स्वागत-सत्कार ही किया है। फिर भी न जाने क्यों इस घर को लक्ष्मी और विजयश्री छोड़ कर चली गईं। मैं क्या कारण बताऊं? आप तो प्रजापति हैं,सभी प्रजाजनों पर एक समान स्नेह करते हैं,तब मेरे पुत्रों पर भी आपको कृपा करनी चाहिए और ऐसा मार्ग बताना चाहिए जिससे वे पुन: अपना खोया हुआ वैभव प्राप्त कर सकें।

महर्षि कश्यप ने अदिति से कहा,मार्ग तो एक ही है और वह है भगवान की अनन्य भक्ति। तुम उन्हीं की उपासना करो। तप करो। केवल दुग्धाहार पर रहो।ओम् नमो भगवते वासुदेवाय इस महामंत्र का जप करो। तुम्हारे तप से भगवान विष्णु प्रसन्न होकर तुम्हें ऐसा वर देंगे कि तुम्हारे पुत्रों का सब प्रकार से कल्याण होगा और उनके सारे दुख दूर हो जाएंगे।

अदिति ने महर्षि के बताए अनुसार जप और तप किया। उसने अपनी बुद्धि को सारथी बनाया और जीवन-रथ में मनोयोगपूर्वक इंद्रिय रूपी घोड़ों को वश में किया। परिणामत: विष्णु प्रकट हो गए और अदिति को वरदान दिया कि वे स्वयं पुत्र के रूप में अदिति के गर्भ से जन्म लेंगे।

वरदान के फलस्वरूप अदिति के गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, वह 'वामन' था। वामन के ब्रह्मतेज के सामने बड़े-बड़े ब्रह्मऋषि तेजरहित हो गए।

बटुक वामन ने एक दिन सुना कि नर्मदा के तट पर भृगुकच्छ क्षेत्र में,जिसे आजकल भरोंच कहते हैं, असुरराज बलि भृगुवंशी ब्राह्मणों द्वारा अश्वमेध यज्ञ करा रहा है, वामन वहां पहुंचे। बटुक बालक को देखकर सारे ब्राह्मण और बड़े-बड़े ऋषि-मुनि स्तंभित हो गए जैसे उनका तेज चला गया हो। राजा बलि ने अतिथि बटुक का यथाविधि सम्मान और पूजन किया।

उसे ऐसा लगा जैसे इस अतिथि के आगमन से उसे यज्ञ का पूरा फल मिल गया हो। उसने बटुक से कहा,हे ब्राह्मणवर!आप यज्ञ के इस अवसर पर मुझसे अवश्य कुछ मांगने की कृपा करें। मैं उसे देकर स्वयं को कृतार्थ हुआ समझूंगा।

वामन बोले, राजन! यह तुम्हारे वंश के अनुरूप ही है। महान भक्त प्रह्लाद के तुम पौत्र हो। तुम धर्मात्मा हो। जो भी वचन दोगे उससे पीछे नहीं हटोगे। मैं ब्राह्मण ब्रह्मचारी हूं। मुझे न तो स्वर्ण चाहिए,न हाथी-घोड़े। मुझे तुम्हारा राज्य भी नहीं चाहिए। संध्या पूजन करने के लिए आसन बिछाने को तीन पग भूमि मुझे दे दोगे तो मेरा यहां आना सफल हो जाएगा।

राजा बलि को आश्चर्य हुआ कि भला यह भी कोई दान है। यह बालक है। इसने विवेक से काम नहीं लिया। केवल थोड़ी-सी भूमि मुझसे मांगी है। उसने बटुक वामन से कहा, ब्राह्मण देवता! आपने जो कुछ मांगा है उसे देना तो मेरे लिए बहुत सरल है।

तीन पग भूमि भी दान में देने की कोई वस्तु है। आप मुझसे कुछ और मांगिए। कोई राज्य कोई नगर, गाएं, रहने के लिए वैभवशाली आश्रम। आप जो मांगेंगे मैं तुरन्त दे दूंगा।वामन बोले,असुरराज! मुझे न तो धन से मोह है न ऐश्वर्य से। मुझे तो सिर्फ प्रभु की आराधना करने के लिए तीन पग भूमि की ही आवश्यकता है।

राजा बलि बार-बार वामन को कुछ और अधिक मांगने के लिए कहता रहा,किंतु वामन ने साफ इंकार कर दिया। उन्होंने कहा,आपने देना ही है तो मुझे तीन पग भूमि दान में दे दीजिए, अन्यथा मना कर दीजिए।

यज्ञ-स्थल में दैत्य गुरु शुक्राचार्य भी बैठे हुए थे। वह अपनी अंतर्दृष्टि से सब समझ गए। उनको लगा कि यह बटुक छल कर रहा है। यह सामान्य ब्राह्मण नहीं है। यह तो विष्णु का रूप है। उन्होंने राजा बलि को समझाया कि इस ब्राह्मण की बातों में मत फंसो,अन्यथा बुरी तरह छले जाओगे। यह ब्राह्मण तुम्हारा सर्वस्व हरण कर लेगा।परन्तु राजा बलि ने हां कह दिया। वह इन्कार करके पाप का भागीदार बनना नहीं चाहता था।

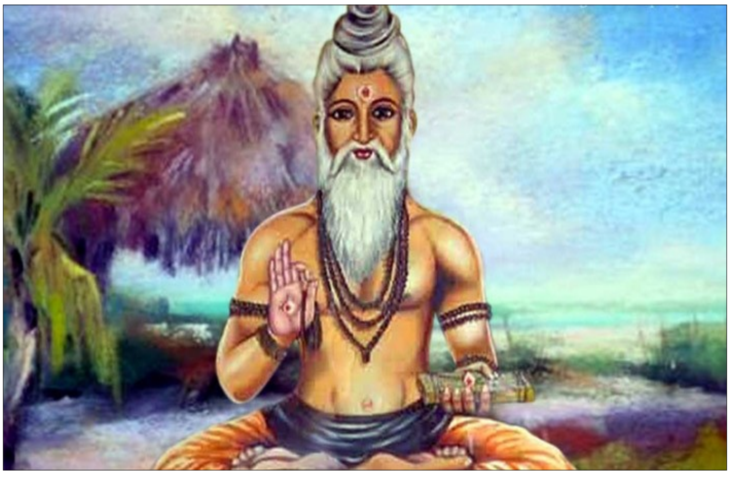

गुरुदेव शुक्राचार्य ने फिर भी उसे सचेत किया, सुनो, दैत्यराज बलि! यदि कोई याचक आए और बिना विचारे ही उसकी मनोवांछित मांग पूरी करने के लिए हां कह दिया जाए तो ऐसा करना धन की अपकीर्त है। सही समय पर दिया हुआ वचन भंग करना अवश्य अपयश का कारण है, परन्तु कभी-कभी असत्य भी अवांछनीय नहीं माना गया है।

परन्तु आचार्य शुक्र के समझाने का राजा बलि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह तो सत्य-प्रतिज्ञ था। विनयपूर्वक उसने आचार्य शुक्र से कहा, आपका कथन सत्य है। आपने गृहस्थ

धर्म समझाया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं परन्तु मैं संसार के प्रथम सत्याग्रही प्रह्लाद का पौत्र सत्य से डरने वाला नहीं हूं।

मैंने जो वचन दे दिया सो दे दिया। अब मैं पीछे नहीं हटूंगा चाहे मेरा सर्वस्व ही क्यों न चला जाए। धन-दौलत और राज्य भी आखिर है क्या? मनुष्य साथ में क्या ले जाएगा? कोई आकर अतिथि के रूप में मेरे प्राणों की याचना भी करे और देना भी स्वीकार कर लिया जाए तो उससे पीछे नहीं हटा जा सकता।

दिया हुआ वचन मैं भंग कैसे करूं, मैं जानता हूं कि मैं आपके आदेश की अवज्ञा कर रहा हूं जो उचित नहीं परन्तु सत्य का पालन करना भी तो आपने ही सिखाया है। सत्य-पालन को ही मैं सबसे बड़ा धर्म मानता हूं। मांगने वाले को सब कुछ दे देने पर भी देने वाला दरिद्र हो जाए तो वह दरिद्रता ही उसके लिए सबसे बड़ी सम्पन्नता है,अत: मैं इस तेजस्वी बटुक को इसका मांगा हुआ अवश्य दूंगा। मैं इसे 'न' कहने वाला नहीं।

शुक्राचार्य रुष्ट होकर चुप हो गए, पर मन-ही-मन शिष्य के सत्य-प्रतिज्ञ होने पर प्रसन्न भी हुए। शुक्राचार्य की बात न मानकर जब राजा बलि को सत्य पर दृढ़ देखा तो वामन ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, 'राजन! तुम्हारे कुल में सभी उदार और दानी हुए हैं। अब तुम मुझे मेरी मांगी हुई तीन पग भूमि का विधिपूर्वक दान करो।

बटुक की इस याचना को सुन राजा बलि राजा,ब्रह्मचारी! तुम अभी बालक मात्र हो। मुझसे यह क्या छोटी-सी चीज मांग रहे हो। मैं चाहूं तो सारी पृथ्वी का दान कर सकता हूं, तुम मुझसे ऐसा दान मांगो जिससे सुखपूर्वक तुम्हारी जीविका चल सके।

परन्तु वामन को तो सिर्फ तीन पग भूमि ही चाहिए थी। वह बोले, मुझे तो सिर्फ तीन पग भूमि ही चाहिए। तुम मुझे वह भूमि देने का संकल्प कर भी चुके हो। अब बताओ भूमि कहां दे रहे हो?

यहीं भी ले लीजिए विप्रवर! राजा बलि बोला, जिस स्थान पर आप अपना पैर रख देंगे वही भूमि आपकी हो जाएगी।

तब बटुक वामन ने अपने असली स्वरूप का प्रदर्शन किया। देखते ही-देखते उसका शरीर इतना विशाल हो गया कि सिर्फ धड़ के कुछ हिस्से को छोड़ उसका शेष शरीर बलि और वहां उपस्थित अन्य व्यक्तियों की नजरों से ओझल हो गया।

वामन का सिर अनंत आकाश में और पैर रसातल (पाताल लोक) में पहुंच गए। पहले ही पग में उसने समस्त पाताल लोक को लांघ लिया। वामन का दूसरा पग सातों लोकों को लांघता हुआ सत्य लोक तक पहुंच गया। राजा बलि का राज्य स्वर्गलोक तक ही तो था। तीसरे पग को रखने के लिए जब जगह न मिली तो वामन ने बलि से पूछा, राजन तुम्हारे राज्य की सीमाएं तो समाप्त हो गईं। अब बताओ मैं अपना तीसरा पग कहां रखूं राजा बलि ने एक क्षण भी विलंब न किया।

उन्होंने अपना मुकुट उतारा और दोनों हाथ जोड़ कर बटुक नारायण के आगे नतमस्तक होकर कहा, आप अपना यह पैर मेरे सिर पर रख लीजिए।

वामन ने अपना चरण उसके सिर पर रख दिया। बलि धन्य हो गया। उसी समय बैकुंठ लोक से आकर प्रह्लाद वहां उपस्थित हो गए और उन्होंने अपने पौत्र पर प्रसन्न होकर कहा, वत्स तू धन्य है। विश्वात्मका नारायण श्रीहरि ने स्वयं प्रकट होकर तेरे मस्तक पर अपना चरण रख दिया है।

तब बटुक नारायण ने सर्वस्व दानी राजा बलि को वरदान देते हुए कहा,हे दानवीर! तुमने मेरी दुर्जय माता को भी जीत लिया। गुरु के तिरस्कार और शाप को भी तुमने सहन कर लिया परन्तु सत्य का त्याग नहीं किया। मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूं। जो स्थान देवताओं को भी दुर्लभ है,

वह मैं तुम्हें देता हूं। तुम आगामी मन्वंतर में इंद्र होगे और मैं सब प्रकार से तुम्हारी सहायता करूंगा। अब तुम पाताल लोक में जाकर निवास करो। जो कोई भी व्यक्ति तुम्हारी आशा के विरुद्ध कुछ भी करेगा उसे मैं अपने सुदर्शन चक्र से नष्ट कर दूंगा। तुम मुझे वहां अपने द्वार पर नित्य प्रति इसी रूप में देखोगे। मैं तुम्हारा द्वारपाल बनकर रहूंगा।

इस प्रकार इंद्र को पुन: स्वर्गलोक प्राप्त हो गया और देवता निर्भय होकर वहां रहने लगे। माता अदिति की तपस्या पूर्ण हुई। सभी धन्य हो गए। अदिति, इंद्र और स्वयं राजा बलि भी।

वामन पुराण में मुख्यरूप से भगवान विष्णु के दिव्य माहात्म्य का व्याख्यान है। विष्णु के वामन अवतार से संबंधित यह दस हजार श्लोकों का पुराण शिवलिंग पूजा, गणेश -स्कन्द आख्यान, शिवपार्वती विवाह आदि विषयों से परिपूर्ण है। इसमें भगवान वामन, नर-नारायण, भगवती दुर्गा के उत्तम चरित्र के साथ भक्त प्रह्लाद तथा श्रीदामा आदि भक्तों के बड़े रम्य आख्यान हैं। इसके अतिरिक्त, शिवजीका लीला-चरित्र, जीवमूत वाहन-आख्यान, दक्ष-यज्ञ-विध्वंस, हरिका कालरूप, कामदेव-दहन, अंधक-वध, लक्ष्मी-चरित्र,

प्रेतोपाख्यान, विभिन्न व्रत, स्तोत्र और अन्त में विष्णुभक्ति के उपदेशों के साथ इस पुराणका उपसंहार हुआ है।

विस्तार :

इस पुराण में श्लोकों की संख्या दस हजार है, इस पुराण में पुराणों के पांचों लक्षणों अथवा वर्ण्य-विषयों-सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित का वर्णन है। सभी विषयों का सानुपातिक उल्लेख किया गया है। बीच-बीच में अध्यात्म-विवेचन, कलिकर्म और सदाचार आदि पर भी प्रकाश डाला गया है।

वामन पुराण की संक्षिप्त जानकारी :

वामनपुराण में कूर्म कल्प के वृतान्त का वर्णन है और त्रिवर्ण की कथा है। यह पुराण दो भागों से युक्त है और वक्ता श्रोता दोनों के लिये शुभकारक है, इसमें पहले पुराण के विषय में प्रश्न है, फ़िर ब्रह्माजी के शिरच्छेद की कथा कपाल मोचर का आख्यान और दक्ष यज्ञ विध्वंश का वर्णन है।

इसके बाद भगवान हर की कालरूप संज्ञा मदनदहन प्रहलाद नारायण युद्ध देवासुर संग्राम सुकेशी और सूर्य की कथा, काम्यव्रत का वर्णन, श्रीदुर्गा चरित्र तपती चरित्र कुरुक्षेत्र वर्णन अनुपम सत्या माहात्म्य पार्वती जन्म की कथा, तपती का विवाह गौरी उपाख्यान कुमार चरित अन्धकवध की कथा साध्योपाख्यान जाबालचरित अरजा की अद्भुतकथा अन्धकासुर और शंकर का युद्ध अन्धक को गणत्व की प्राप्ति मरुदगणों के जन्म की कथा राजा बलि का चरित्र लक्ष्मी चरित्र त्रिबिक्रम चरित्र प्रहलाद की तीर्थ यात्रा और उसमें अनेक मंगलमयी कथायें धुन्धु का चरित्र प्रेतोपाख्यान नक्षत्र पुरुष की कथा श्रीदामा का चरित्र त्रिबिक्रम चरित्र के बाद ब्रह्माजी द्वारा कहा हुआ उत्तम स्तोत्र तथा प्रहलाद और बलि के संवाद के सुतल लोक में श्रीहरि की प्रशंसा का उल्लेख है।

कैसे मनाएं वामन द्वादशी पर्व, पढ़ें महत्व एवं पूजा विधिः

वामन द्वादशी पर्व वामन जयंती के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व 30 अगस्त को मनाया जाएगा, पौराणिक मान्यता के अनुसार यह व्रत रखने से पूर्व में हुए ज्ञात-अज्ञात पापों का नाश हो जाता है। इस दिन खासतौर में श्रीकृष्ण भगवान और धन की देवी माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

इस दिन भगवान वामन की पूजा और आराधना के साथ ही व्रत करने और कथा सुनने का महत्व है। देवी अदिति के यहां भगवान वामन का अवतार हुआ था। आइए जानते हैं इस दिन कैसे करें पूजन-

कैसे मनाएं पर्व, ऐसे करें पूजा :-

1. इस दिन भगवान वामन की मूर्ति या चित्र की पूजा करें।

2. मूर्ति है तो दक्षिणावर्ती शंख में गाय का दूध लेकर अभिषेक करें।

3. यदि चित्र है तो सामान्य पूजा करें।

4. इस दिन भगवान वामन का पूजन करने के बाद कथा सुनें और बाद में आरती करें।

5. अंत में चावल, दही और मिश्री का दान कर किसी गरीब या ब्राह्मण को भोजन कराएं।

6. अगर यदि किसी पंडित से पूजा करा रहे हैं तो विधि-विधान से पूजा के साथ ही व्रत भी रखा जाता है।

7. वामन मूर्ति के समीप 52 पेड़े और 52 दक्षिणा रखकर पूजा करते हैं। पंचामृत भोग लगाना भी श्रेष्ठ है।

8. भगवान् वामन को भोग लगाकर सकोरों में चीनी, दही, चावल, शर्बत तथा दक्षिणा पंडित को दान करने के बाद वामन द्वादशी का व्रत पूरा करते हैं।

9. व्रत उद्यापन में पंडित को

1.माला

2.गौ मुखी मंडल
3.छाता
4.आसन
5.गीता
6.लाठी
7.फल
खड़ाऊं तथा दक्षिणा देकर इस पर्व को संपन्न करना लाभदायी रहेगा।

10 वासुदेव द्वादशी के दिन भगवान को हाथ का पंखा, फल और पुष्प विशेष रूप से चढ़ाने चाहिए।

11. इस दिन भगवान विष्णु के सहस्त्रनाम जपने से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

कब है वामन द्वादशी, जानिए सही तारीख और कैसे करें पूजनः

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को वामन द्वादशी या वामन जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष वामन द्वादशी/ जयंती 30 अगस्त को मनाई जाएगी, वहीं मत-मतांतर के चलते यह पर्व कई स्थानों पर 29 अगस्त को भी मनाया जा रहा है।

प्राचीन धर्मग्रंथों के अनुसार इसी शुभ तिथि को श्रीविष्णु के अन्य रूप भगवान वामन का अवतार हुआ था। इस दिन को श्रवण द्वादशी भी कहते हैं। इस द्वादशी तिथि को श्रवण नक्षत्र पड़ने के कारण इस व्रत का नाम श्रवण द्वादशी पड़ा है। श्रीमद्भागवत के अनुसार इस तिथि पर भगवान वामन का प्राकट्य हुआ था।

भगवान श्रीहरि विष्णु अत्यंत दयालु हैं। वे ही

1.नारायण

2.वासुदेव

3.शिव

4.कृष्ण

5.परमात्मा

6.ईश्वर

7.शाश्वत

8.हिरण्यगर्भ

अच्युत आदि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं। उनकी शरण में जाने पर मनुष्य का परम कल्याण हो जाता है।

हिंदू धार्मिक पुराणों तथा मान्यताओं के अनुसार इस दिन भक्तों को व्रत-उपवास करके भगवान वामन की स्वर्ण प्रतिमा बनवाकर पंचोपचार सहित पूजा करनी चाहिए।

ऐसे करें वामन द्वादशी व्रतः-

* इस दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर वामन द्वादशी व्रत का संकल्प लेना चाहिए।

* इस दिन उपवास रखना चाहिए।

* अभिजीत मुहूर्त में भगवान विष्णु के वामन अवतार का पूजन करना चाहिए।

* सायंकाल के समय में पुन: स्नान करने के बाद भगवान वामन का पूजन करके व्रत कथा सुननी चाहिए।

* पूजन के समय एक बर्तन में दही, चावल, शकर आदि रखकर उसे किसी योग्य ब्राह्मण को दान देने का विशेष महत्व है।

* तत्पश्चात ब्राह्मण को भोजन करवाकर स्वयं फलाहार करना चाहिए।

* ऐसा माना जाता है कि जो भक्त श्रद्धा-भक्तिपूर्वक इस दिन भगवान वामन का व्रत व पूजन करते हैं, उनके सभी कष्ट दूर होते हैं और वे भक्तों की हर मनोकामना पूरी करते हैं।

जैन धर्म में श्रवण द्वादशी का महात्म्य :

जैन समुदाय में भी श्रवण द्वादशी व्रत का महात्म्य बहुत अधिक माना गया है। इस व्रत पर सुहागिन महिलाएं अपने अखंड सुहाग तथा संतान प्राप्ति के लिए यह व्रत रखकर मंगलकामना करती हैं।

जैन धर्म में इस व्रत को 12 वर्ष तक विधिपूर्वक किया जाता है तथा उसके उपरांत इसका उद्यापन किया जाता है। इस दिन भगवान वासुपूज्य की पूजा, अभिषेक, स्तुति के साथ-साथ निम्न मंत्र का जाप करने का महत्व है।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: स्वाहा'।

वामन पूजन मन्त्र :

देवेश्वराय देवश्य,देव संभूति कारिणे।
प्रभावे सर्व देवानां वामनाय नमो नमः।

अर्ध्य मंत्र :

नमस्ते पदमनाभाय नमस्ते जलः शायिने तुभ्यमर्च्य प्रयच्छामि वाल यामन अप्रिणे।।
नमः शांग धनुर्याण पाठ्वे वामनाय च। यज्ञभुव फलदा त्रेच वामनाय नमो नमः।।

वामन जयंती का महत्व :

इस दिन से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कहा गया है कि,अगर वामन जयंती के दिन श्रावण नक्षत्र हो तो इस व्रत की महत्ता कई गुना बढ़ जाती है। ऐसे में इस दिन

भक्तों को उपवास करके वामन भगवान की स्वर्ण प्रतिमा बनवाकर पंचोपचार विधि सहित उनकी पूजा करने का नियम बताया गया है। इस दिन जो कोई भी इंसान पूरी श्रद्धा-भक्ति से वामन भगवान की पूजा करते हैं, उन्हें उनके सभी कष्टों से मुक्ति अवश्य मिलती है।

माना जाता है कि भगवान विष्णु के इस अवतार का सीधा संबंध बृहस्पति ग्रह से जुड़ा हुआ होता है। ऐसे में जिस भी जातक के गुरु ग्रह कुंडली में ख़राब या दुर्बल अवस्था में होते हैं उन्हें वामन अवतार की कथा पढ़नी चाहिए और यह उपवास भी करना चाहिए। ऐसा करने से बृहस्पति ग्रह से जुड़ी परेशानियाँ अवश्य ख़त्म होने लग जाएँगी।

विशेषतौर पर अगर किसी की कुंडली में बृहस्पति नीच दशा में है या शनि/राहु/केतु के साथ बैठा है या छठे,आठवें और बारहवें स्थान में विराजमान है,उन्हें वामन देव की विशेष पूजा का विधान बताया गया है। यह व्रत उन लोगों के लिए वरदान साबित हो सकता है जो बृहस्पति की दशा से गुज़र रहे हैं।

वामन जयंती पूजा विधि :

- इस दिन सुबह दैनिक कार्यों से निवृत होकर स्नान करें।
- इसके पश्चात भगवान वामन का पंचोपचार अथवा षोडषोपचार पूजन करें।
- इस दिन पूजा के बाद चावल, दही इत्यादि वस्तुओं का दान करना बेहद शुभ होता है। ऐसे में अपनी यथाशक्ति के अनुसार इस दिन दान अवश्य करें।
- शाम के समय दोबारा वामन देव की पूजा करें, व्रत कथा कहें या सुनें।

- पूजा के बाद सभी लोगों में प्रसाद वितरण करें।
- इस दिन अगर मुमकिन हो तो ब्राह्मणों को भोजन कराएं, उन्हें घर पर नहीं बुला सकते हैं तो उनके नाम से अन्न या दान वाली चीज़ें पूजा के समय ही अलग कर दें और फिर इसे किसी मंदिर में दे आयें।

इस दिन की पूजा में अवश्य शामिल करें यह मंत्र, "ॐ तप रूपाय विद्महे श्रृष्टिकर्ताय धीमहि तन्नो वामन प्रचोदयात्"।

क्या आपको चाहिए एक सफल एवं सुखद जीवन? राज योग रिपोर्ट से मिलेंगे सभी उत्तर

वामन जयंती के दिन करें यह विशेष उपाय :

अगर किसी इंसान के जीवन में लगातार कोई पारिवारिक कलेश चिंता की वजह बना हुआ है, तो उन्हें वामन जयंती के दिन कुछ विशेष उपाय करने की सलाह दी जाती है। क्या है वो विशेष उपाय, आइये जानते हैं।पारिवारिक कलेश दूर करना है तो, इस दिन वामन कलश पर कांसे के दीपक में गाय के दूध से बने घी का बारह मुखी दीप प्रज्वलित करें।

इसके नौकरी में तरक्की चाहिए तो,इस दिन वामन कलश पर इत्र लगे 12 सिक्के चढ़ाकर पीले कपड़े में बांधकर रखें।

अच्छी सेहत की कामना के लिए,इस दिन वामन कलश पर चढ़े चंदन से तिलक करें।

शिक्षा के क्षेत्र में तरक्की करने के लिए,इस दिन पेन हाथ में लेकर 108 बार 'वं वामनाय नमः' मंत्र का जाप करें।

प्यार में तरक्की पाने के लिए,इस दिन वामन कलश पर 12 गुलाबी फूल चढ़ाएं।

आइये अब जानते हैं वामन जयंती से जुड़ी पौराणिक कथा :

मान्यता है कि वामन जयंती के दिन इस कथा को पढ़ने या सुनने मात्र से मनोकामनाएं पूरी होती हैं।जब दैत्यराज बलि ने देवता इंद्र को हराकर स्वर्ग लोक पर अपना अधिकार जमा लिया तो यह सब देखकर देवता इंद्र की माँ अदिति को अत्यंत दुःख हुआ।

ऐसे में अपने बेटे के लिए उन्होंने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। माँ अदिति की पूजा से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु वहां प्रकट हुए और उन्होंने कहा,हे माँ, आप परेशान ना हों। मैं आपके पुत्र के रूप में जन्म लूँगा और इंद्र देव को उनका खोया हुआ साम्राज्य वापिस दिलाऊंगा।

इसके बाद भगवान विष्णु ने माँ अदिति के गर्भ से वामन के रूप में जन्म लिया। तब उन्हें ज्ञात हुआ कि बलि,इन्द्रलोक पर स्थायी रूप से अधिकार ज़माने के लिए अश्वमेध यज्ञ कर रहा है। ऐसे में वामन उस स्थान पर जैसे ही पहुंचे उनके तेज से यज्ञशाला प्रकाशित हो उठी।

तब बलि ने उनका सत्कार किया और अंत में उनसे कोई भेंट मांगने के लिए कहा। तब वामन देव ने उससे कहा कि मुझे तीन पग भूमि दे दो। इस पर बलि ने हाथ में जल लेकर तीन पग भूमि देने का संकल्प ले लिया।

जैसे ही संकल्प पूरा हुआ वामन देव का आकार बढ़ने लगा। इसके बाद उन्होंने अपने एक पग से पृथ्वी,दूसरे से स्वर्ग को नाप लिया,तीसरे पग के लिए क्योंकि कोई जगह नहीं बची थी इसलिए बलि ने अपना मस्तिष्क ही उनके सामने कर दिया।

अपने वचन के लिए बलि की ऐसी निष्ठा देखकर वामन देव बेहद प्रसन्न हुए और उन्होंने बलि को पाताल लोक का अधिपति बना दिया और देवताओं को उनके भय से मुक्ति भी दिला दी।

वामन द्वादशी कथा :

शास्त्रों में वामन अवतार को भगवान विष्णु का महत्वपूर्ण अवतार माना जाता है,श्रीमद्भगवद पुराण में वामन अवतार का उल्लेख मिलता है। वामन अवतार कथा अनुसार देव और दैत्यों के युद्ध में देव पराजित होने लगते हैं, असुर सेना अमरावती पर आक्रमण करने लगती है, तब इन्द्र भगवान विष्णु की शरण में जाते हैं ।

भगवान विष्णु उनकी सहायता करने का आश्वासन देते हैं और वामन रुप में माता अदिति के गर्भ से जन्म लेते हैं ।भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन अदिति के गर्भ से प्रकट हो अवतार लेते हैं तथा ब्राह्मण-ब्रह्मचारी का रूप धारण करते हैं।

वामन अवतार और बलि की कथा :

महर्षि कश्यप ऋषियों के साथ उनका उपनयन संस्कार करते हैं वामन बटुक को महर्षि पुलह ने यज्ञोपवीत,अगस्त्य ने मृगचर्म, मरीचि ने पलाश दण्ड, आंगिरस ने वस्त्र,सूर्य ने छत्र,भृगु ने खड़ाऊं गुरु देव जनेऊ तथा कमण्डल,अदिति ने कोपीन,सरस्वती ने रुद्राक्ष

माला तथा कुबेर ने भिक्षा पात्र प्रदान किए तत्पश्चात भगवान वामन पिता से आज्ञा लेकर बलि के पास जाते हैं राजा बली नर्मदा के उत्तर-तट पर अन्तिम अश्वमेध यज्ञ कर रहे होते हैं।

भगवान वामन जी ब्राह्माण वेश धर कर,राजा बलि के पास भिक्षा मांगने पहुंते हैं,और भिक्षा में तीन पग भूमि मांगते हैं,राजा बलि अपने वचन पर अडिग रहते हुए,तीन पग भूमि दान में दे देते हैं। वामन रुप श्री भगवान ने एक पग में स्वर्ग ओर दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लेने के बाद तीसरा पैर रखने के लिए ब्रह्मांड में कोई जगह ही नहीं बची तब राजा बलि ने अपना सिर भगवान के पैर के नीचे रखते हुए कहा हे भगवन तीसरा पग मेरे सिर पर रखे।

राजा बलि के द्वारा वचन का पालन करने पर, भगवान वामन अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और बलि को पाताललोक का स्वामी बना देते हैं इस तरह भगवान वामन देवताओं की सहायता कर उन्हें पुन: स्वर्ग का अधिकारी बनाते हैं।

वामन द्वादशी व्रत का फल :

कहा जाता हैं कि अगर इस दिन श्रावण नक्षत्र हो तो इस व्रत की महत्ता और भी बढ़ जाती है,भक्तों को इस दिन उपवास करके वामन भगवान का पंचोपचार सहित पूजन करना चाहिए ।जो भक्ति श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक वामन भगवान की पूजा करते हैं वामन भगवान उनको सभी कष्टों से उसी प्रकार मुक्ति दिलाते हैं जैसे उन्होंने देवताओं को राजा बलि के कष्ट से मुक्त किया था।

केरल में है भगवान वामन का 700 साल से भी ज्यादा पुराना मंदिर,यहीं से होती है ओणम पर्व की शुरुआत :

ओणम उत्सव में की जाती है भगवान वामन और पाताल के राजा बलि की पूजा, माना जाता है इस दौरान महाबली अपनी प्रजा से मिलने आते हैं पृथ्वी पर 29 अगस्त को वामन जयंती है।

नर्मदापुरम के भागवत कथाकार पं.हर्षित कृष्ण बाजपेयी का कहना है कि हर साल भाद्रपद महीने के शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि पर वामन प्रकोटत्सव मनाया जाता है। भागवत कथा के आठवें स्कंध के आठरहवें अध्याय की कथा के अनुसार सतयुग में इस दिन भगवान विष्णु ने वामन रूप में अवतार लिया था।

ये अवतार श्रीमद्भागवत कथा में बताए गए चौबीस अवतारों में पंद्रहवा था। केरल के कोच्चि में थ्रिक्काकरा में भगवान वामन का मंदिर है। वामन जयंती पर यहां खास पूजा की जाती है और इसके बाद ओणम पर्व की शुरुआत होती है। यहां के लोगों का मानना है कि ओणम उत्सव के दौरान राजा बलि यहां आते हैं।

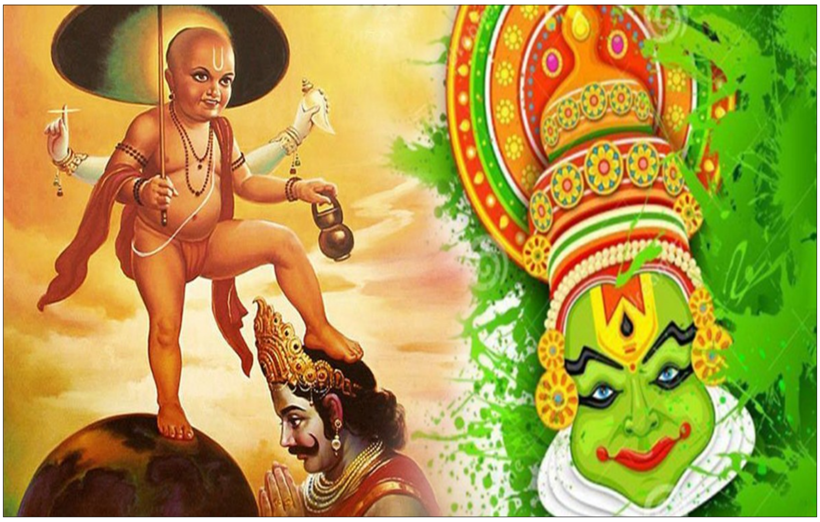

केरल का भगवान वामन मंदिर :

थ्रिक्काकरा मंदिर कब बना,वहां की मूर्ति कितने साल पुरानी है इस बारे में सटीक जानकारी तो मौजूद नहीं है लेकिन मंदिर से मिले शिलालेख 10 वीं से 13 वीं शताब्दी के हैं। हालांकि, मूल मंदिर और भी पुराना हो सकता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि कि ये मंदिर चेर राजवंश के शासन काल का है। जिन्होंने 9 वीं से 12 वीं शताब्दी तक केरल पर शासन किया था।

हालांकि वर्तमान में मौजूद वामनमूर्ति मंदिर की वर्तमान संरचना बहुत पुरानी नहीं है। सालों से ये मंदिर धीरे-धीरे टूट रहा था और 1900 के दशक तक यह बहुत हद तक टूट चुका था। इसलिए 20 वीं सदी के शुरुआती सालों में मंदिर का जिर्णोद्धार करवाया गया है।

इस मंदिर से होती है ओणम की शुरुआत :

10 दिवसीय ओणम पर्व की शुरुआत इस मंदिर में रंगीन झंडा फहरा कर की जाती है। ओणम इस मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। इसलिए यहां ओणसद्या यानी ओणम का भोज भी भव्य तरीके से आयोजित किया जाता है। सभी धर्मों के लोग समान रूप से इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। इससे पहले त्रावणकोर महाराजा के शासन में यहां 61 स्थानीय

शासकों ने मिलकर ओणम त्योहार आयोजित किया था। मंदिर में अन्य उत्सव विशु, दिवाली, मकर संक्रांति, नवरात्रि और सरस्वती पूजा भी मनाए जाते हैं।

ये है वामन अवतार से जुड़ी कथा :

सतयुग में असुर बलि ने देवताओं को हराकर स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया था। इसके बाद देवता भगवान विष्णु से मदद मांगने पहुंचे। तब विष्णुजी ने देवमाता अदिति के गर्भ से वामन रूप में अवतार लिया। इसके बाद एक दिन राजा बलि यज्ञ कर रहा था,तब वामनदेव बलि के पास गए और तीन पग धरती दान में मांगी। शुक्राचार्य के मना करने के बाद भी राजा बलि ने वामनदेव को तीन पग धरती दान में देने का वचन दिया। इसके बाद वामनदेव ने विशाल रूप किया। एक पग में धरती और दूसरे पग में स्वर्ग नाप लिया।

तीसरा पैर रखने के लिए कोई स्थान नहीं बचा तो बलि ने वामन देव को खुद के सिर पर पैर रखने को कहा।वामनदेव ने जैसे ही बलि के सिर पर पैर रखा, वह पाताल लोक पहुंच गया। बलि की दानवीरता से खुश होकर भगवान ने उसे पाताल लोक का स्वामी बना दिया और सभी देवताओं को उनका स्वर्ग लौटा दिया।

यूपी के इस शहर में बना है भगवान विष्णु के वामन अवतार का दुर्लभ मंदिर, जानिए यहां का इतिहास :

यूपी के कानपुर शहर में भगवान विष्णु के दशावतारों में से एक वामन अवतार का दुर्लभ मंदिर घनी आबादी हटिया में आज भी स्थित है। यह मंदिर आस्था का केंद्र है। मान्यता है कि समर्पण भाव से वामन देव की पूजा करने पर अहंकार समाप्त हो जाता है और मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

हटिया बर्तन बाजार स्थित मंदिर कब और किसने बनवाया इसके प्रमाणिक तथ्य तो उपलब्ध नहीं हैं लेकिन बताया जाता है कि शहर के कारोबारी आनंद प्रसाद गर्ग ने 1940 में एक पुराना मकान खरीदा। मकान में वामन देव का मंदिर पाकर उस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया और विधि विधान से पूजन किया जाने लगा। मंदिर में वामन अवतार की श्याम वर्ण प्रतिमा के साथ बलदाऊ और रेवती की मूर्तियां भी हैं। हटिया मंदिर में वामन द्वादशी को विशेष पूजन का भी आयोजन किया जाता है।

मंदिर के पूर्व पुजारी ब्रह्मलीन गुरुनारायण पांडेय के पुत्रादि अब यहां का कार्यभार देखते हैं। मंदिर के पुजारी मनोज पांडेय ने बताया कि यहां मान्यता है अहंकार त्यागकर

समर्पण भाव से पूजन करने पर प्रभु प्रसन्न होते हैं। यह मंदिर उत्तर भारत का एकमात्र मंदिर है। यहां वामन द्वादशी के मौके पर भक्तगण दूर-दूर से दर्शन के लिए आते हैं। इस साल 21 सितंबर 2018 को को वामन देवता का जन्म महोत्सव मनाया जाएगा।

वामन मंदिर कांचीपुरम- विष्णु की अदभुत प्रतिमा :

कांचीपुरम शहर के बिल्कुल मध्य में कामाक्षी देवी मंदिर के पास ही वामन मंदिर स्थित है। वैसे तो इस मंदिर का परिसर बहुत बड़ा नहीं पर यह कांचीपुरम के अनूठे मंदिरों में से एक है। यहां भगवान विष्णु की अदभुत प्रतिमा देखने को मिलती है। भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर जिस असुर महाबली को हराया था, उसी की याद में उनका नाम वामन पड़ा था।

वामन भगवान केमंदिर में भगवान वामन (श्रीविष्णु) की पांच मीटर ऊंची विशाल मूर्ति है। यह मूर्ति काले पत्थरों की बनी है। इसमें भगवान का एक चरण ऊपर के लोकों को नापते हुए ऊपर उठा हुआ है जबकि दूसरा चरण राजा बलि के मस्तक पर है। जब आप इस मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचते हैं तो मंदिर के पुजारी एक बांस में बहुत मोटी बत्ती अर्थात मशाल जलाकर भगवान के श्रीमुख का दर्शन कराते हैं।

विष्णु की इस तरह की मूर्ति और कहीं देखने को नहीं मिलती। मंदिर में प्रवेश के लिए 2 रुपये का दान का टिकट भी है। इसी मंदिर के समीप ही सुब्रह्मण्य मंदिर भी है, जिसमें स्वामी कार्तिकेय की भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है।

वामन अवतार की कथा- वामन अवतार भगवान विष्णु का पांचवा अवतार है। इसकी कथा श्रीमदभागवत पुराण में आती है। कथा में देवता दैत्यों से युद्ध में पराजित होने लगते

हैं। शुक्राचार्य अपनी संजीवनी विद्या से दैत्यों को लगातार जीवित कर देते हैं। खुद को हारता देख इंद्र विष्णु की शरण में पहुंचते हैं। देवताओं के आग्रह पर वामन अवतारी श्रीहरि, राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने पहुंच जाते हैं।

ब्राह्मण बने श्री विष्णु भिक्षा में तीन पग भूमि मांगते हैं। राजा बलि दैत्यगुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी अपने वचन पर अडिग रहते हुए, श्री विष्णु को तीन पग भूमि दान में देने का वचन कर देते हैं। वामन रुप में भगवान एक पग में स्वर्ग और उर्ध्व लोकों को ओर दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लेते हैं। अब तीसरा पांव रखने को कोई स्थान नहीं रह जाता है।

तीसरा पैर मेरे सिर पर रखें :

बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। ऐसे में राजा बलि यदि अपना वचन नहीं निभाए तो अधर्म होगा।इसलिए बलि अपना सिर भगवान के आगे कर देता है और कहता है तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने ठीक वैसा ही करते हैं और बलि को पाताल लोक में रहने का आदेश करते हैं। वहीं श्री विष्णु को अपना वचन का पालन करते हुए,पातललोक में राजा बलि का द्वारपाल बनना स्वीकार करते हैं।

वामन अवतार से जुड़ी है गुजरात के इस गांव की मान्यता :

वंथली नगर पालिका ने नए नाम का प्रस्ताव पारित किया
वामन स्थली के नाम से जाना जाएगा वंथली गांव
विश्व का एकमात्र भगवान वामन का मंदिर यहां स्थित है

नागढ़ जिले के वंथली गांव का नाम अब वामन स्थली हो जाएगा। वंथली पालिका ने इस आशय का प्रस्ताव पारित कर इस स्थल को पहचान दिलाने की कोशिश शुरू कर दी है। मान्यता है कि यह गांव भगवान विष्णु के वामन अवतार से जुड़ा है। वंथली शहर भाजपा प्रमुख दिव्येश जेठवा ने वंथली नगर पालिका को पत्र भेजकर इसकी मांग की थी। वंथली पौराणिक नगर है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु का वामन का अवतार इस गांव से जुड़ा है। जिसके कारण इसे वामन स्थली कहा जाता था। इस नगर में कई ऐतिहासिक विरासत भी मौजूद है। प्रशासन अब इन सभी को सहेजने का काम भी करेगा। हाल में यह वंथली के रूप में जाना जाता है। इसके गौरवपूर्ण इतिहास को फिर से जीवंत करने की आवश्यकता है। हाल में 24 में से 23 सदस्यों ने वामन स्थली नाम बदलने पर सहमति जताई। वंथली मे विश्व का एकमात्र भगवान वामन का मंदिर स्थित है।

भगवान विष्णु का पांचवा अवतार :

पौराणिक कथाओं के अनुसार,भगवान विष्णु के कई अवतार में से वामन अवतार को सबसे महत्वपूर्ण अवतारों में से एक माना गया है। उन्हें पांचवें अवतार के रूप में जाना जाता है। श्रीमद्भगवद पुराण बताया गया है कि देव और दैत्यों के युद्ध में जब देव पराजित होने लगे और असुर सेना अमरावती पर आक्रमण करने लगी।

तब इंद्रदेव भगवान विष्णु से सुरक्षा की मांग करने उनके शरण में जा पहुंचे। भगवान ने उन्हें धैर्य दिलाया और कहा कि वह माता अदिति के गर्भ से वामन के रूप में जन्म लेकर दैत्यराज बलि से देवताओं को मुक्ति दिलाएंगे। इसके बाद उचित समय पर महर्षि कश्यप के सहयोग से माता अदिति ने पयोव्रत का अनुष्ठान किया, ये अनुष्ठान पुत्र प्राप्ति के लिए किया जाता है।

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन माता अदिति के गर्भ से भगवान विष्णु ने वामन देव के रूप में अवतरण लिया और ब्राह्मण-ब्रह्मचारी का रूप धारण कर लिया। एक दिन भगवान राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने पहुंचे और भिक्षा में तीन पग भूमि मांगी । राजा बलि ने उन्हें तीन पग भूमि दान देने का वचन दिया।

तब भगवान वामन ने विशाल रूप रखकर एक पग में स्वर्ग ओर दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया और अभी तीसरा पैर रखना शेष था। राजा बलि ने अपना सिर भगवान के आगे झुकाकर तीसरा पग सिर पर रखने के लिए कहा। भगवान के पैर रखते ही राजा बलि पाताल लोक पहुंच गए।

वामन जयंती आज,इस अवतार में भगवान विष्णु ने दिखाए ये **5** चमत्क :

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन देशभर में वामन जयंती मनाई जाती है। इस बार यह पर्व 21 सिंतंबर, शुक्रवार को है। शास्त्रों के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु ने वामन के रूप में अपना पांचवा अवतार लिया था। द्वादशी तिथि को मनाए जाने के कारण इसे वामन द्वादशी भी कहते हैं। श्रीमद्भागवत कथा के अनुसार, सतयुग में प्रहलाद के पौत्र दैत्यराज बलि ने स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया था। तब सभी देवता भगवान विष्णु के पास अपनी समस्या लेकर जाते हैं। भगवान विष्णु देवताओं को आश्वसन देकर कहते हैं कि शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मैं अदिति के गर्भ से जन्म लेकर आपको स्वर्ग दिलवाऊंगा। आइए, जानते हैं वामन जयंती के बारे में खास बातें

शुक्राचार्य को काना बना दिया :

जब भगवान वामन राजा बलि के पास दान मांगने आए तो असुरों के गुरु शुक्राचार्य ने राजा बलि को ऐसा करने से रोका। लेकिन बलि नहीं माने और दान देने के लिए तैयार हो गए। कोई अन्य उपाय ना देखकर शुक्राचार्य उस पात्र में समा गए जिससे जल लेकर राजा बलि दान करने जा रहे थे। इससे पात्र से जल नहीं निकल रहा था।

भगवान वामन इसका कारण समझ गए और एक एक तिनका उठाकर पात्र के छिद्र चुभा दिया। तिनका जाकर शुक्राचार्य की आंख में लग गया इससे शुक्राचार्य की एक आंख फूट गई और वह तड़पते हुए पात्र से बाहर निकल आए।दैत्यराज बलि ने गुरू शुक्राचार्य की बात न मानकर दान देने का वचन कर लिया। भगवान वामन ने विशाल स्वरूप में एक पग में सभी लोग और दूसरे पगल में पूरी पृथ्वी को नाप लिया। भगवान ने दोनों ही पग में तीनों लोक नाप लिए।

बलि को भेजा सुतल लोकः

भगवान वामन ने विशाल रूप धारण कर एक पग में धरती और दूसरे पग में स्वर्ग लोक नाप लिया, जिस पर दैत्यराज बलि ने अधिकार कर लिया था। जब तीसरा पैर रखने के लिए कोई स्थान नहीं बचा तो बलि ने भगवान वामन को अपने सिर पर पग रखने को कहा। बलि के सिर पर पैर रखने से वह सुतल लोक पहुंच गया।

पहली बार दिखाया विराट स्वरूप :

वामन,भगवान विष्णु के पांचवे तथा त्रेता युग के पहले अवतार थे। इसके साथ ही यह विष्णु के पहले ऐसे अवतार थे जो मानव रूप में प्रकट हुए थे। इन्होंने इस अवतार में अपना विराट स्वरूप के दर्शन राजा बलि को करवाए थे। इससे पहले इतने बड़े स्वरूप का दर्शन भगवान ने किसी अवतार में नहीं लिया था।

बिना अस्त्र-शस्त्र के दिलाई जीत :

भगवान विष्णु ने वामन अवतार में बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के देवताओं की राक्षसों से जीत दिलवाई थी। ऐसा भगवान के किसी भी अवतार में नहीं हुआ। इनको दक्षिण भारत में उपेन्द्र के नाम से भी जाना जाता है।

जलझूलनी एकादशी आज,जानिए इसका महत्व और पूजा विधि :

मध्यप्रदेश,राजस्थान जैसे कुछ राज्यों में इसे डोल ग्यारस भी कहा जाता है। इस एकादशी के दिन भगवान विष्णु-लक्ष्मी का श्रृंगार करके खूबसूरत डोले में सजाकर यात्रा निकाली जाती है,इसलिए इसे डोल ग्यारस कहा जाता है। इसे पद्मा एकादशी और वामन एकादशी भी कहा जाता है।

शास्त्रों में इस एकादशी का सर्वाधिक महत्व है क्योंकि इस दिन भगवान विष्णु और उनके आठवें अवतार भगवान श्रीकृष्ण की विशेष पूजा की जाती है। कहा जाता है इस दिन माता यशोदा का जलवा पूजन किया गया था। इसे परिवर्तनी एकादशी भी कहा जाता है क्योंकि चातुर्मास के दौरान अपने शयनकाल में इस दिन भगवान विष्णु करवट बदलते हैं।

वामन अवतार की भी पूजा की जाती है :

जलझूलनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु के वामन अवतार की भी पूजा की जाती है, क्योंकि इसी दिन राजा बलि से भगवान विष्णु ने वामन रूप में उनका सर्वस्व दान में मांग लिया था एवं उसकी भक्ति से प्रसन्न् होकर अपनी एक प्रतिमा राजा बलि को सौंप दी थी, इसी वजह से इसे 'वामन एकादशी''भी कहा जाता है। यह पद्मा एकादशी के नाम से भी प्रसिद्ध है। पद्मा माता लक्ष्मी का एक नाम है। इस दिन जो व्यक्ति एकादशी का व्रत करता है उस पर मां लक्ष्मी अपना संपूर्ण वैभव लुटा देती है।

जलझूलनी एकादशी का महत्व :

शास्त्रों का कथन है कि भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की इस एकादशी को करने से वाजपेय यज्ञ के समान फल मिलता है। इससे जीवन से समस्त संकटों, कष्टों का नाश हो जाता है और व्यक्ति को मृत्यु के उपरांत मोक्ष प्राप्त हो जाता है। वह सीधा भगवान विष्णु के परम लोक बैकुंठ चला जाता है। जीवन में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, पद, धन-धान्य की प्राप्ति के लिए यह एकादशी प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। चूंकि इसे पद्मा एकादशी भी कहा जाता है इसलिए मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए इस दिन उनकी विशेष पूजा का विधान भी है।

इस एकादशी के विशिष्ट उपाय :

जीवन में आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए जलझूलनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु के मंदिर में एक साबुत श्रीफल और सवा सौ ग्राम साबुत बादाम चढ़ाएं।

यदि आपको बार-बार कर्ज लेने की नौबत आती है। लाख कोशिशों के बाद भी कर्ज नहीं उतर पा रहा है तो इस एकादशी के दिन पीपल के पेड़ की जड़ में शकर डालकर जल अर्पित करें और शाम के समय पीपल के नीचे दीपक लगाएं।

इस एकादशी की रात्रि में अपने घर में या किसी विष्णु मंदिर में भगवान श्रीहरि विष्णु के सामने नौ बत्तियों वाला रात भर जलने वाला दीपक लगाएं। इससे आर्थिक उन्नति तेजी से होने लगती है। सारा कर्ज उतर जाता है और व्यक्ति का जीवन सुख-सौभाग्य से भर जाता है।

इस एकादशी के दिन भगवान विष्णु का पूजन करते समय कुछ सिक्के उनके सामने रखें। पूजन के बाद ये सिक्के लाल रेशमी कपड़े में बांधकर अपने पर्स या तिजोरी में हमेशा रखें। इससे आपके धन के भंडार भरने लगेंगे। यह उपाय खासकर व्यापारियों को अवश्य करना चाहिए। जिन युवक-युवतियों का विवाह नहीं हो पा रहा है वे इस एकादशी के दिन भगवान विष्णु का पीले पुष्पों से श्रृंगार करें। उन्हें सुगंधित चंदन लगाएं और इसके बाद बेसन की मिठाई का नैवेद्य लगाएं। शीघ्र विवाह होगा।

एकादशी पर विशिष्ट ग्रह संयोग :

जलझूलनी पर इस बार एक प्रमुख ग्रह शुक्र का राशि परिवर्तन हो रहा है।

1.भौतिक सुख-सुविधाओं,

2.सौंदर्य,

3.प्रेम,

4.आकर्षण

दांपत्य सुख आदि का प्रतिनिधि ग्रह शुक्र 9 सितंबर को राशि परिवर्तन कर कन्या राशि में प्रवेश करने जा रहा है। शुक्र का यह राशि परिवर्तन समस्त राशि वालों पर सकारात्मक प्रभाव दिखाने वाला है। शुक्र पर मां लक्ष्मी का भी विशेष अधिकार होता है इसलिए इस पद्मा एकादशी के दिन मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए व्रत जरूर करना चाहिए।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥
त्रैलोक्यराज्यमाक्षिप्य बलेरिन्द्राय यो ददौ।
श्रीधराय नमस्तस्मै छद्मवामनरूपिणे ॥१॥

पुलस्त्यमृषिमासीनमाश्रमेवाग्विदांवरम्।
नारदः परिपप्रच्छ पुराणं वामनाश्रयम् ॥२॥

कथं भगवता ब्रह्मन् विष्णुना प्रभविष्णुना।
वामनत्वं धृतं पूर्वं तन्ममाचक्ष्व पृच्छतः ॥३॥

कथं च वैष्णवो भूत्वा प्रह्लादो दैत्यसत्तमः।
त्रिदशैर्युयुधे सार्थमत्र मे संशयो महान् ॥४॥

श्रूयते च द्विजश्रेष्ठ दक्षस्य दुहिता सती।
शंकरस्य प्रिया भार्या बभूव वरवर्णिनी ॥५॥

किमर्थं सा परित्यज्य स्वशरीरं वरानना।
जाता हिमवतो गेहे गिरीन्द्रस्य महात्मनः ॥६॥

पुनश्च देवदेवस्य पत्नीत्वमगमच्छुभा।
एतन्मे संशयं छिन्धि सर्ववित् त्वं मतोऽसि मे ॥७॥

तीर्थानां चैव माहात्म्यं दानानां चैव सत्तम।
व्रतानां विविधानां च विधिमाचक्ष्व मे द्विज ॥८॥

एवमुक्तो नारदेन पुलस्त्यो मुनिसत्तमः।
प्रोवाच वदतां श्रेष्ठो नारदं तपसो निधिम् ॥९॥

पुलस्त्य उवाच
पुराणं वामनं वक्ष्ये क्रमान्निखिलमादितः।
अवधानं स्थिरं कृत्वा श्रृणुष्व मुनिसत्तम ॥१०॥

पुरा हैमवती देवी मन्दरस्थं महेश्वरम्।
उवाच वचनं दृष्ट्वा ग्रीष्मकालमुपस्थितम् ॥११॥

ग्रीष्मः प्रवृत्तो देवेश न च ते विद्यते गृहम्।
यत्र वातातपौ ग्रीष्मे स्थितयोर्नौ गमिष्यतः ॥१२॥

एवमुक्तो भवान्या तु शंकरो वाक्यमब्रवीत्।
निराश्रयोऽहं सुदती सदाऽरण्यचरः शुभे ॥१३॥

इत्युक्ता शंकरेणाथ वृक्षच्छायासु नारद।
निदाघकालमनयत् समं शर्वेण सा सती ॥१४॥

निदाघान्ते समुद्भूतो निर्जनाचरितोऽद्भुतः।
घनान्धकारिताशो वै प्रावृट्कालोऽतिरागवान् ॥१५॥

तं दृष्ट्वा दक्षतनुजा प्रावृट्कालमुपस्थितम्।
प्रोवाच वाक्यं देवेशं सती सप्रणयं तदा ॥१६॥

विवान्ति वाता हृदयावदारणा
गर्जन्त्यमी लोयधरा महेश्वर।
स्फुरन्ति नीलाभ्रगणेषु विद्युतो
वाशन्ति केकारवमेव बर्हिणः ॥१७॥

पतन्ति धारा गगनात् परिच्युता
बका बलाकाश्च सरन्ति तोयदान्।
कदम्बसर्ज्जार्जुनकेतकीद्रुमाः
पुष्पाणि मुञ्चन्ति सुमारुताहताः ॥१८॥

श्रुत्वैव मेघस्य दृढं तु गर्जितं
त्यजन्ति हंसाश्च सरांसि तत्क्षणात्।
यथाश्रयान् योगिगणः समन्तात्
प्रवृद्धमूलानपि संत्यजन्ति ॥१९॥

इमानि यूथानि वने मृगाणां
चरन्ति धावन्ति रमन्ति शंभो।

तथाऽचिराभाः सुतरां स्फुरन्ति
पश्येह नीलेषु घनेषु देव।
नूनं समृद्धिं सलिलस्य दृष्ट्वा
चरन्ति शूरास्तरुणद्रुमेषु ॥२०॥

उद्वृत्तवेगाः सहसैव निम्नगा
जाताः शशङ्काङ्कितचारुमैले।
किमत्र चित्रं यदनुज्ज्वलं जनं
निषेव्य योषित् भवति त्वशीला ॥२१॥

नीलैश्च मेघैश्च समावृतं नभः
पुष्पैश्च सर्जा मुकुलैश्च नीपाः।
फलैश्च बिल्वाः पयसा तथापगाः
पत्रैः सपद्मैश्च महासरांसि ॥२२॥

काले सुरौद्रे ननु ते ब्रवीमि।
गृहं कुरुष्वात्र महाचजलोत्तमे
सुनिर्वृता येन भवामि शंभो ॥२३॥

इत्थं त्रिनेत्रः श्रुतिरामणीयकं श्रुत्वा वचो वाक्यमिदं बभाषे।
न मेऽस्ति वित्तं गृहसंचयार्थे मृगारिचर्मावरणं मम प्रिये ॥२४॥

ममोपवीतं भुजगेश्वरः शुभे कर्णेऽपि पद्मश्च तथैव पिङ्गलः।
केयूरमेकं मम कम्बलस्त्वहिर्द्वितीयमन्यो भुजगो धनंजयः ॥२५॥

नागस्तथैवाश्वतरो हि कङ्कणं सव्येतरे तक्षक उत्तरे तथा।
नीलोऽपि नीलाञ्जनतुल्यवर्णः श्रोणीतटे राजति सुप्रतिष्ठः ॥२६॥

पुलस्त्य उवाच
इति वचनमथोग्रं शंकरात्सा मृडानी ऋतमपि तदसत्यं श्रीमदाकर्ण्य भीता।
अवनितलमवेक्ष्य स्वामिनो वासकृच्छ्रात् परिवदति सरोषं लज्जयोच्छ्वस्य चोष्णम् ॥२७॥

देव्युवाच
कथं हि देवदेवेश प्रावट्कालो गमिष्यति।

वृक्षमूले स्थिताया मे सुदुःखेन वदाम्यतः ॥२८॥

शङ्कर उवाच
घनावस्थितदेहायाः प्रावृट्कालः प्रयास्यति।
यथाम्बुधारा न तव निपतिष्यन्ति विग्रहे ॥२९॥

पुलस्त्य उवाच
ततो हरस्तद्घनखण्डमुन्नत
मारुह्य तस्थौ सह दक्षकन्यया
ततोऽभवन्नाम तदेश्वरस्य
जीमूतकेतुस्त्विति विश्रुतं दिवि ॥३०॥

इति श्रीवामनपुराणे प्रथमोऽध्यायः ॥1

वामनपुराण - अध्याय २

पुलस्त्य उवाच
ततस्त्रिनेत्रस्य गतः प्रावृट्कालो घनोपरि।
लोकानन्दकरी रम्या शरत् समभवन्मुने ॥१॥

त्यजन्ति नीलाम्बुधरा नभस्तलं वृक्षांश्च कङ्काः सरितस्तटानि।
पद्माः सुगन्धं निलयानि वायसा रुरुर्विषाणं कलुषं जलाशयः ॥२॥

विकासमायन्ति त पङ्कजानि चन्द्रांशवो भान्ति लताः सुपुष्पाः।
नन्दन्ति हृष्टान्यपि गोकुलानि सन्तश्च संतोषमनुव्रजन्ति ॥३॥

सरस्सु पद्म गगने च तारका जलाशयेष्वेव तथा पयांसि।
सतां च चित्तं हि दिशां मुखैः समं
वैमल्यमायान्ति शशङ्ककान्तयः ॥४॥

एतादृशे हरः काले मेघपृष्ठाधिवासिनीम्।
सतीमादाय शैलेन्द्रं मन्दरं समुपाययौ ॥५॥

ततो मन्दरपृष्ठेऽसौ स्थितः समशिलातले।
रराम शंभुर्भगवान् सत्या सह महाद्युतिः ॥६॥

ततो व्यतीते शरदि प्रतिबुद्धे च केशवे।
दक्षः प्रजापतिश्रेष्ठो यष्टुमारभत क्रतुम् ॥७॥

द्वादशेव स चादित्यान् शक्रादींश्च सुरोत्तमान्।
सकश्यपान् समामन्त्र्य सदस्यान् समचीकरत् ॥८॥

अरुन्धत्या च सहितं वसिष्ठं शंसितव्रतम्।
सहानसूययाऽत्रिं च सह धृत्या च कौशिकम् ॥९॥

अहल्यया गौतमं च भरद्वाजममायया।
चन्द्रया सहितं ब्रह्मन्नृषिमङ्गिरसं तथा ॥१०॥

आमन्त्र्य कृतवान्दक्षः सदस्यान् यज्ञसंसदि।
विद्वान् गुणसंपन्नान् वेदवेदाङ्गपारगान् ॥११॥

धर्मं च स समाहूय भार्ययाऽहिंसया सह।
निमन्त्र्य यज्ञवाटस्य द्वारपालत्वमादिशत् ॥१२॥

अरिष्टनेमिनं चक्रे इध्माहरणकारिणम्।
भृगुं च मन्त्रसंस्कारे सम्यग् दक्षं प्रयुक्तवान् ॥१३॥

तथा चन्द्रमसं देवं रोहिण्या सहितं शुचिम्।
धनानामाधिपत्ये च युक्तवान् हि प्रजापतिः ॥१४॥

जामातृदुहितुश्चैव दौहित्रांश्च प्रजापतिः।
सशंकरां सतीं मुक्त्वा मखे सर्वान् न्यमन्त्रयत् ॥१५॥

नारद उवाच
किमर्थं लोकपतिना धनाध्यक्षो महेश्वरः।
ज्येष्ठः श्रेष्ठो वरिष्ठोऽपि आद्योऽपि न निमन्त्रितः ॥१६॥

पुलस्त्य उवाच
ज्येष्ठः श्रेष्ठो वरिष्ठोऽपि आद्योऽपि भगवान् शिवः।
कपालीति विदित्वेशो दक्षेण न निमन्त्रितः ॥१७॥

नारद उवाच
किमर्थं देवताश्रेष्ठः शूलपाणिस्त्रिलोचनः
कपाली भगवाञ्जातः कर्मणा केन शंकरः ॥१८॥

श्रृणुष्वावहितो भूत्वा कथामेतां पुरातनीम्।
प्रोक्तमादिपुराणे च ब्रह्मणाऽव्यक्तमूर्त्तिना ॥१९॥

पुरा त्वेकार्णवं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
नष्टचन्द्रार्कनक्षत्रं प्रणष्टपवनानलम् ॥२०॥

अप्रतर्क्यमविज्ञेयं भावाभावविवर्जितम्।
निमग्नपर्वततरु तमोभूतं सुदुर्दशम् ॥२१॥

तस्मिन् स शेते भगवान् निद्रां वर्षसहस्रिकीम्।
रात्र्यन्ते सृजते लोकान् राजसं रूपमास्थितः ॥२२॥

राजसः पञ्चवदनो वेदवेदाङ्गपारगः।
स्रष्टा चराचरस्यास्य जगतोऽद्भुतदर्शनः ॥२३॥

तमोमयस्तथैवान्यः समुद्भूतस्त्रिलोचनः।
शूलपाणिः कपर्द्दी च अक्षमालां च दर्शयन् ॥२४॥

ततो महात्मा ह्यसृजदहंकारं सुदारुणम्।
येनाक्रान्तावुभौ देवौ तावेव ब्रह्मशंकरौ ॥२५॥

अहंकारावृतो रुद्रः प्रत्युवाच पितामहम्।
को भवानिह संप्राप्तः केन सृष्टोऽसि मां वद ॥२६॥

पितामहोऽप्यहंकारात् प्रत्युवाचाथ को भवान्।
भवतो जनकः कोऽत्र जननी वा तदुच्यताम् ॥२७॥

इत्यन्योन्यं पुरा ताभ्यां ब्रह्मेशाभ्यां कलिप्रिय।
परिवादोऽभवत् तत्र उत्पत्तिर्भवतोऽभवत् ॥२८॥

भवानप्यन्तरिक्षं हि जातमात्रस्तदोत्पतत्।

धारयन्नतुलां वीणां कुर्वन् किलकिलाध्वनिम् ॥२९॥

ततो विनिर्जितः शंभुर्मानिना पद्मयोनिना।
तस्थावधोमुखो दीनो ग्रहाक्रान्तो यथा शशी ॥३०॥
पराजिते लोकपतौ देवेन परमेष्टिना।
क्रोधान्धकारितं रुद्रं पञ्चमोऽथ मुखोऽब्रवीत् ॥३१॥

अहं ते प्रतिजानामि तमोमूर्तो त्रिलोचन।
दिग्वासा वृषभारूढो लोकक्षयकरो भवान् ॥३२॥

इत्युक्ताः शंकरः क्रुद्धो वदनं घोरचक्षुषा।
निर्दग्धुकामस्त्वनिशं ददर्श भगवानजः ॥३३॥

ततस्त्रिनेत्रस्य समुद्भवन्ति वक्त्राणि पञ्चाथ सुदर्शनानि।
श्वेतं च रक्तं कनकावदातं नीलं तथा पिङ्गजटं च शुभ्रम् ॥३४॥

वक्त्राणि दृष्ट्वाऽर्कसमानि सद्यः पैतामहं वक्त्रमुवाच वाक्यम्।
समाहतस्याथ जलस्य बुद्बुदा भवन्ति किं तेषु पराक्रमोऽस्ति ॥३५॥

तच्छ्रुत्वा क्रोधयुक्तेन शंकरेण महात्मना।
नखाग्रेण शिरश्छिन्नं ब्राह्मं परुषवादिनम् ॥३६॥

तच्छिन्नं शंकरस्यैव सव्ये करतलेऽपतत्।
पतते न कदाचिच्च तच्छंकरकराच्छिरः ॥३७॥

अथ क्रोधावृतेनापि ब्रह्मणाऽद्भुतकर्मणा।
सृष्टस्तु पुरुषो धीमान् कवची कुण्डली शरी ॥३८॥

धनुष्पाणिर्महाबाहुर्बाणशक्तिधरोऽव्ययः।
चतुर्भुजो महातूणी आदित्यसमदर्शनः ॥३९॥

स प्राह गच्छ दुर्बुद्धे मा त्वां शूलिन् निपातये।
भवान् पापसमायुक्तः पापिष्ठं को जिघांसति ॥४०॥

इत्युक्ताः शंकरस्तेन पुरुषेण महात्मना।

त्रपायुक्तो जगामाथ रुद्रो बदरिकाश्रमम् ॥४१॥

नरनारायणस्थानं पर्वते हि हिमाश्रये।
सरस्वती यत्र पुण्या स्यन्दते सरितां वरा ॥४२॥

तत्र गत्वा च तं दृष्ट्वा नारायणमुवाच ह।
भिक्षां प्रयच्छ भगवन् महाकापालिकोऽस्मि भोः ॥४३॥

इत्युक्तो धर्मपुत्रस्तु रुद्रं वचनमब्रवीत्।
सव्यं भुजं ताडयस्व त्रिशूलेन महेश्वर ॥४४॥

नारायणवचः श्रुत्वा त्रिशूलेन त्रिलोचनः।
सव्यं नारायणभुजं ताडयामास वेगवान् ॥४५॥

त्रिशूलाभिहतान्मार्गात् तिस्रो धारा विनिर्ययुः।
एका गगनमाक्रम्य स्थिता ताराभिमण्डिता ॥४६॥

द्वितीया न्यपतद् भूमौ तां जग्राह तपोधनः।
अत्रिस्तस्मात् समुद्भूतो दुर्वासाः शंकरांशतः ॥४७॥

तृतीया न्यपतद् धारा कपाले रौद्रदर्शने।
तस्माच्छिशुः समभवत् सन्नद्धकवचो युवा ॥४८॥

श्यामावदातः शरचापपाणिर्गर्जन्यथा प्रावृषि तोयदोऽसौ।
इत्थं ब्रुवन् कस्य विशातयामि स्कन्धाच्छिरस् तालफलं यथैव ॥४९॥

तं शंकरोऽभ्येत्य वचो बभाषे नरं हि नारायणबाहुजातम्।
निपातयैनं नर दुष्टवाक्यं ब्रह्मात्मजं सूर्यशतप्रकाशम् ॥५०॥

इत्येवमुक्तः स तु शंकरेण आद्यं धनुस्त्वाजगवं प्रसिद्धम्।
जग्राह तूणानि तथाऽक्षयाणि युद्धाय वीरः स मतिं चकार ॥५१॥

ततः प्रयुद्धौ सुभृशं महाबलौ ब्रह्मात्मजो बाहुभवश्च शार्वः।
दिव्यं सहस्रं परिवत्सराणां ततो हरोऽभ्येत्य विरञ्चिमूचे ॥५२॥

जितस्त्वदीयः पुरुषः पितामह नरेण दिव्यद्भुतकर्मणा बली।

महापृषत्कैरभिपत्य ताडितस्तदद्भुतं चेह दिशो दशैव ॥५३॥

ब्रह्मा तमीशं वचनं बभाषे नेहास्य जन्मान्यजितस्य शंभो।
पराजितश्चेष्यतेऽसौ त्वदीयो नरो मदीयः पुरुषो महात्मा ॥५४॥

इत्येवमुक्तो वचनं त्रिनेत्रश्चिक्षेप सूर्ये पुरुषं विरिञ्चेः।
नरं नरस्यैव तदा स विग्रहे चिक्षेप धर्मप्रभवस्य देवः ॥५५॥

इति श्रीवामनपुराणे द्वितीयोध्यायः ॥२॥

वामनपुराण - अध्याय ३

पुलस्त्य उवाच
ततः करतले रुद्रः कपाले दारुणे स्थिते।
संतापमगमद् ब्रह्मंश्चिन्तया व्याकुलेन्द्रियः ॥१॥

ततः समागता रौद्रा नीलाञ्जनचयप्रभा।
सरक्तमूर्द्धजा भीमा ब्रह्महत्या हरान्तिकम् ॥२॥

तामागतां हरो दृष्ट्वा पप्रच्छ विकरालिनीम्।
काऽसि त्वमागता रौद्रे केनाप्यर्थेन तद्वद ॥३॥

कपालिनमथोवाच ब्रह्महत्या सुदारुणा।
ब्रह्मवध्याऽस्मि संप्राप्तां मां प्रतीच्छ त्रिलोचन ॥४॥

इत्येवमुक्त्वा वचनं ब्रह्महत्या विवेश ह।
त्रिशूलपाणिनं रुद्रं संप्रतापितविग्रहम् ॥५॥

ब्रह्महत्याभिभूतश्च शर्वो बदरिकाश्रमम्।
आगच्छन्न ददर्शाथ नरनारायणावृषी ॥६॥

अदृष्ट्वा धर्मतनयौ चिन्ता शोकसमन्वितः।
जगाम यमुनां स्नातुं साऽपि शुष्कजलाऽभवत् ॥७॥

कालिन्दीं शुष्कसलिलां निरीक्ष्य वृषकेतनः।
प्लक्षजां स्नातुमगमदन्तर्द्धानं च सा गता ॥८॥

ततो नु पुष्करारण्यं मागधारण्यमेव च।
सैन्धवारण्यमेवासौ गत्वा स्नातो यथेच्छया ॥९॥

तथैव नैमिषारण्यं धर्मारण्यं तथेश्वरः।
स्नातो नैव च सा रौद्रा ब्रह्महत्या व्यमुञ्चत ॥१०॥

सरित्सु तीर्थेषु तथाश्रमेषु पुण्येषु देवायतनेषु शर्वः।
समायुतो योगयुतोऽपि पापान्नावाप मोक्षं जलदध्वजोऽसौ ॥११॥

ततो जगाम निर्विण्णः शंकरः कुरुजाङ्गलम्।
तत्र गत्वा ददर्शाथ चक्रपाणिं खगध्वजम् ॥१२॥

तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं शङ्खचक्रगदाधरम्।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हरः स्तोत्रमुदीरयत् ॥१३॥

हर उवाच
नमस्ते देवतानाथ नमस्ते गरुडध्वज।
शङ्खचक्रगदापाणे वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१४॥

नमस्ते निर्गुणानन्त अप्रतर्क्याय वेधसे
ज्ञानाज्ञान निरालम्ब सर्वालम्ब नमोऽस्तु ते ॥१५॥

रजोयुक्त नमस्तेऽस्तु ब्रह्ममूर्ते सनातन।
त्वया सर्वमिदं नाथ जगत्सृष्टं चराचरम् ॥१६॥

सत्त्वाधिष्ठित लोकेश विष्णुमूर्ते अधोक्षज।
प्रजापाल महाबाहो जनार्दन नमोऽस्तु ते ॥१७॥

तमो मूर्त्ते अहं ह्येष त्वदंशक्रोधसंभवः।
गुणाभियुक्त देवेश सर्वव्यापिन् नमोऽस्तु ते ॥१८॥

भूरियं त्वं जगन्नाथ जलाम्बरहुताशनः।
वायुर्बुद्धिर्मनश्चापि शर्वरी त्वं नमोऽस्तु ते ॥१९॥

धर्मो यज्ञस्तपः सत्यमहिंसा शौचमार्जवम्।

क्षमा दानं दया लक्ष्मीर्ब्रह्मचर्यं त्वमीश्वर ॥२०॥

त्वं साङ्गाश्चतुरो वेदास्त्वं वेद्यो वेदपारगः।
उपवेदा भवानीश सर्वोऽसि त्वं नमोऽस्तु ते ॥२१॥

नमो नमस्तेऽच्युत चक्रपाणे नमोऽस्तु ते माधव मीनमूर्ते।
लोके भवान् कारुणिको मतो मे त्रायस्व मां केशव पापबन्धात् ॥२२॥

ममाशुभं नाशय विग्रहस्थं यद् ब्रह्महत्याऽभिभवं बभूव।
दग्धोऽस्मि नष्टोऽस्म्यसमीक्ष्यकारी पुनीहि तीर्थोऽसि नमो नमस्ते ॥२३॥

पुलस्त्य उवाच
इत्थं स्तुतश्चक्रधरः शंकरेण महात्मना।
प्रोवाच भगवान् वाक्यं ब्रह्महत्याक्षयाय हि ॥२४॥

गिरिरुवाच॥
महेश्वर श्रृणुष्वेमां मम वाचं कलस्वनाम्।
ब्रह्महत्याक्षयकरीं शुभदां पुण्यवर्धनीम् ॥२५॥

योऽसौ प्राङ्मण्डले पुण्ये मदंशप्रभवोऽव्ययः।
प्रयागे वसते नित्यं योगशायीति विश्रुतः ॥२६॥

चरणाद् दक्षिणात्तस्य विनिर्याता सरिद्वरा।
विश्रुता वरणेत्येव सर्वपापहरा शुभा ॥२७॥

सव्यादन्या द्वितीया च असिरित्येव विश्रुता।
ते उभे सरितच्छ्रेष्ठे लोकपूज्ये बभूवतुः ॥२८॥

ताभ्यां मध्ये तु यो देशस्तत्क्षेत्रं योगशायिनः।
त्रैलोक्यप्रवरं तीर्थं सर्वपापप्रमोचनम् ॥२९॥

न तादृशोऽस्ति गगने न भूम्यां न रसातले।
तत्रास्ति नगरी पुण्या ख्याता वाराणसी शुभा।
यस्यां हि भोगिनोऽपीश प्रयान्ति भवतो लयम् ॥३०॥

विलासिनीनां रशनास्वनेन श्रुतिस्वनैर्ब्रह्मणपुंगवानाम्।
शुचिस्वरत्वं गुरवो निशम्य हास्यादशासन्त मुहुर्मुहुस्तान् ॥३१॥

व्रजत्सु योषित्सु चतुष्पथेषु पदान्यलक्तारुणितानि दृष्ट्वा।
ययौ शशी विस्मयमेव यस्यां किंस्वित् प्रयाता स्थलपद्मिनीयम् ॥३२॥

तुङ्गनि यस्यां सुरमन्दिराणि रुन्धन्ति चन्द्रं रजनीसुखेषु।
दिवाऽपि सूर्यं पवनाप्लुताभिर्दीर्घाभिरेवं सुपताकिकाभिः ॥३३॥

भृङ्गाश्च यस्यां शशिकान्तभित्तौ प्रलोभ्यमानाः प्रतिबिम्बितेषु।
आलेख्ययोषिद्विमलाननाब्जेष्वीयुर्भ्रमान्नैव च पुष्पकान्तम् ॥३४॥

परिश्रमश्चापि पराजितेषु नरेषु संमोहनखेलनेन।
यस्यां जलक्रीडनसंगतासु न स्त्रीषु शंभो गृहदीर्घकासु ॥३५॥

न चैव कश्चित् परमन्दिराणि रुणद्धि शंभो सहसा ऋतेऽक्षन्।
न चाबलानां तरसा पराक्रमं करोति यस्यां सुरतं हि मुक्त्वा ॥३६॥

पाशग्रन्थिर्गजेन्द्राणां दानच्छेदो मदच्युतौ।
यस्यां मानमदौ पुंसां करिणां यौवनागमे ॥३७॥

प्रियदोषाः सदा यस्यां कौशिका नेतरे जनाः।
तारागणेऽकुलीनत्वं गद्ये वृत्तच्युतिर्विभो ॥३८॥

भूतिलुब्धा विलासिन्यो भुजंगपरिवारिताः।
चन्द्रभूषितदेहाश्च यस्यां त्वमिव शंकर ॥३९॥

ईदृशायां सुरेशान वाराणस्यां महाश्रमे।
वसते भगवाँल्लोलः सर्वपापहरो रविः ॥४०॥

दशाश्वमेधं यत्प्रोक्तं मदंशो यत्र केशवः।
तत्र गत्वा सुरश्रेष्ठ पापमोक्षमवाप्स्यसि ॥४१॥

इत्येवमुक्तो गरु-डध्वजेन वृषध्वजस्तं शिरसा प्रणम्य।
जगाम वेगाद् गरुडो यथाऽसौ वाराणसीं पापविमोचनाय ॥४२॥